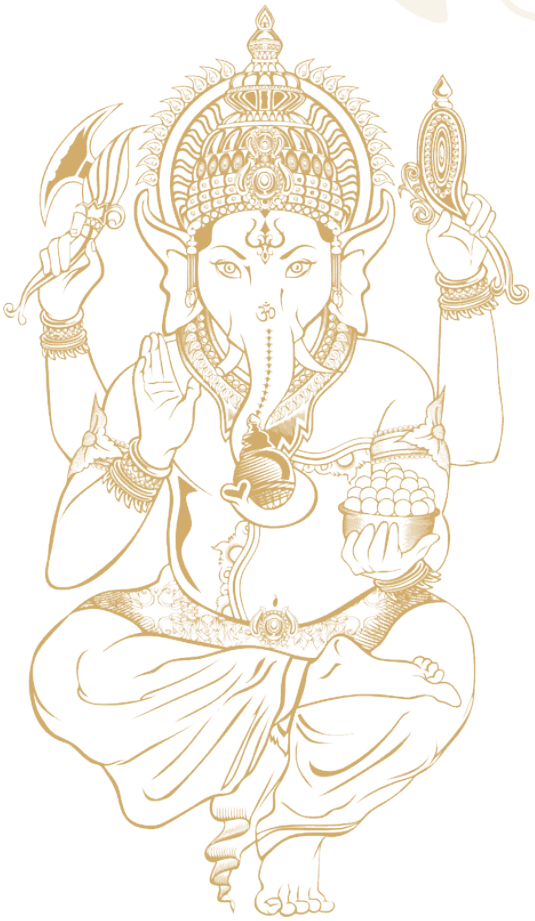

Gopal Rohidas Jadhav

07 Jul 1990

04:00 AM

Buldana

Model: Web-KundliPhal **Order No: 120568101**

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**6-07/07/1990**
दिवस	शुक्र–शनिवार
जन्म समय	**04:00:00 कला**
इष्ट	55:25:59 घटी
स्थान	**Buldana**
राज्य	Maharashtra
देश	India

अक्षांश	20:31:00 उत्तर
रेखांश	76:18:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:24:48 कला
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 कला
स्थानिक वेल	03:35:12 कला
वेलान्तर	-00:04:38 कला
साम्पातिक वेल	22:33:45 कला
सूर्योदय	05:49:36 कला
सूर्यास्त	19:09:10 कला
दिनमान	13:19:34 कला
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	वर्षा
सूर्याचे अंश	20:51:16 मिथुन
लग्नाचे अंश	24:49:44 वृषभ

अवकहड़ा चक्र

लग्न–लग्नाधिपति	वृषभ – शुक्र
राशि–स्वामी	**धनु – गुरु**
नक्षत्र–चरण	**मूल – 3**
नक्षत्र स्वामी	केतु
योग	ब्रह्म
करण	वणिज
गण	राक्षस
योनि	श्वान
नाड़ी	आद्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	मानव
वर्ग	उंदीर
युँजा	अन्त्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	भा–भरत
पाया(राशि–नक्षत्र)	लौह – ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कर्क

पंचांग

आजोबांचें नांव _____:
बडीलांचे नांव _____:
आईचें नांव _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	माह	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1912	आषाढ़	16
पंजाबी	संवत : 2047	आषाढ़	23
बंगाली	सन् : 1397	आषाढ़	22
तमिल	संवत : 2047	अनी	23
केरल	कोल्लम : 1165	मिधुनम	23
नेपाली	संवत : 2047	आषाढ़	23
चैत्रादी	संवत : 2047	आषाढ़	शुक्ल 15
कार्तिकादी	संवत : 2047	आषाढ़	शुक्ल 15

पंचांग

सूर्योदय समयी तिथि _____: 14
तिथि समाप्ति वेल _____: 29:22:16
जन्म तिथि _____: 14
सूर्योदय समयी नक्षत्र _____: ज्येष्ठा
नक्षत्र समाप्ति वेल _____: 11:42:36 कला
जन्म योग _____: मूल
सूर्योदय समयी योग _____: शुक्ल
योग समाप्ति वेल _____: 11:19:38 कला
जन्म योग _____: ब्रह्म
सूर्योदय समयी करण _____: गर
करण समाप्ति वेल _____: 16:28:31 कला
जन्म करण _____: वणिज
भयात _____: 40:43:30
भभोग _____: 65:56:31
भोग्य दशा वेल _____: केतु 2 वर्ष 8 मा 7 दि

घात चक्र

मास _____: श्रावण
तिथि _____: 3-8-13
दिवस _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: भरणी
योग _____: वज्र
करण _____: तैतिल
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मांजर
लग्न _____: धनु
रवि _____: तुला
चन्द्र _____: मीन
मंगळ _____: वृश्चिक
बुध _____: सिंह
गुरु _____: धनु
शुक्र _____: कुम्भ
शनि _____: कन्या
राहु _____: कुम्भ

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

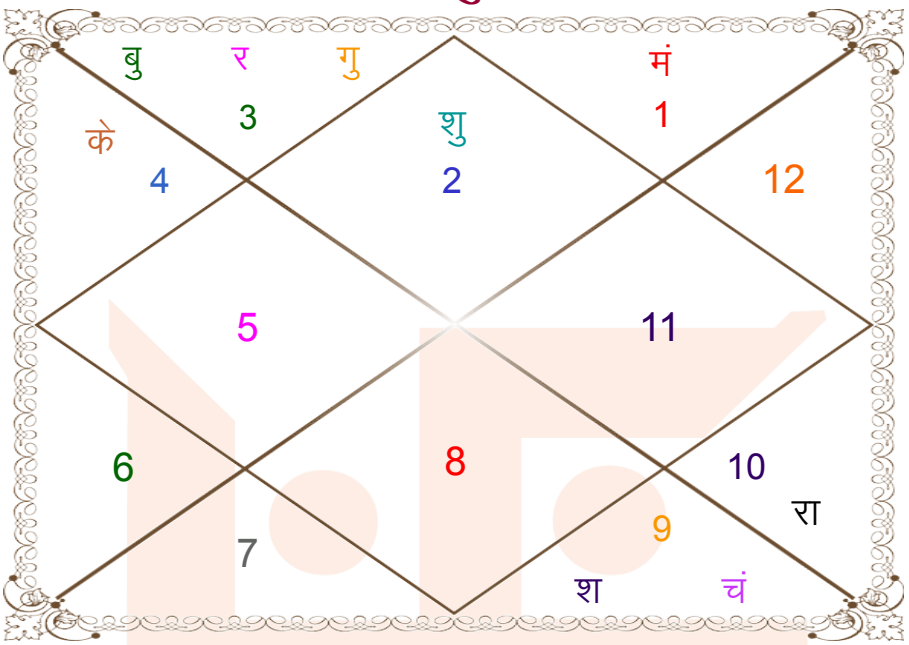

चन्द्र कुंडली

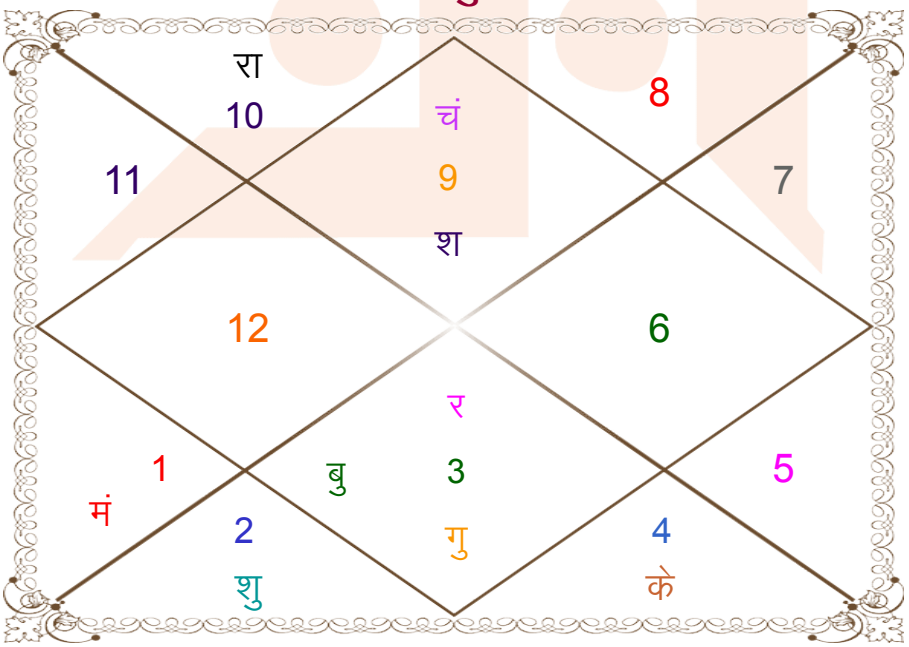

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

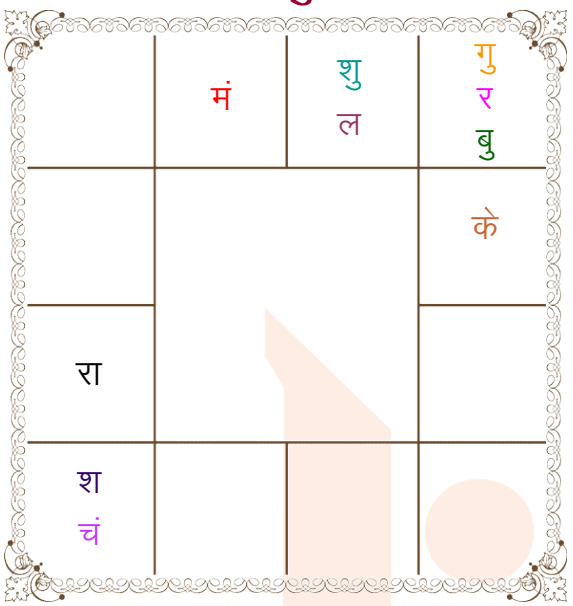

लग्न कुंडली

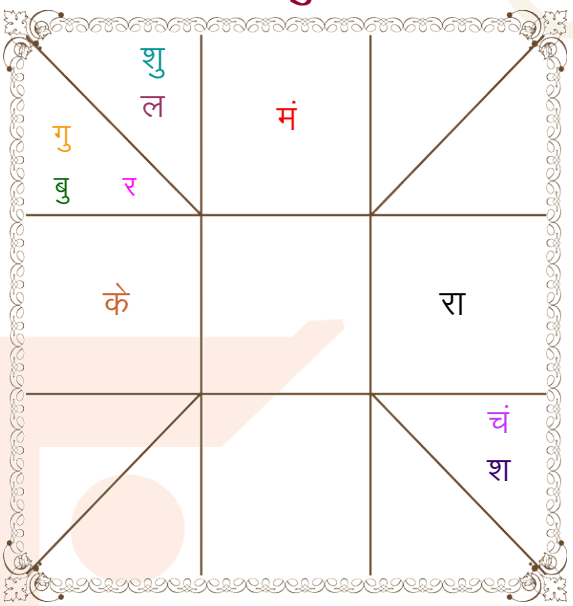

विंशोत्तरी
केतु 2वर्ष 8मा 7दि

केतु

07/07/1990

15/03/2106

केतु	14/03/1993
शुक्र	14/03/2013
रवि	15/03/2019
चन्द्र	14/03/2029
मंगळ	14/03/2036
राहु	14/03/2054
गुरु	14/03/2070
शनि	14/03/2089
बुध	15/03/2106

योगिनी
उल्का 2वर्ष 3मा 19दि

उल्का

26/10/2022

25/10/2028

उल्का	26/10/2023
सिद्धा	25/12/2024
संकटा	26/04/2026
मंगळा	26/06/2026
पिंगला	26/10/2026
धान्या	26/04/2027
भ्रामरी	26/12/2027
भद्रिका	25/10/2028

ग्रह स्पष्ट तथा त्यांची स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृष	24:49:44	345:37:32	मृगशिरा	1	5	शुक्र	मंगळ	राहु	----
सूर्य			मिथु	20:51:16	00:57:11	पुनर्वसु	1	7	बुध	गुरु	गुरु	सम राशि
चंद्र			धनु	08:12:52	12:08:55	मूल	3	19	गुरु	केतु	गुरु	सम राशि
मंगळ			मेष	02:24:14	00:41:12	अश्विनी	1	1	मंगळ	केतु	शुक्र	मूलत्रिकोण
बुध		अ	मिथु	25:53:58	02:06:52	पुनर्वसु	2	7	बुध	गुरु	केतु	स्वगृही
गुरु		अ	मिथु	26:54:03	00:13:26	पुनर्वसु	3	7	बुध	गुरु	शुक्र	शत्रु राशि
शुक्र			वृष	20:26:36	01:11:33	रोहिणी	4	4	शुक्र	चंद्र	केतु	स्वगृही
शनि	व		धनु	28:51:58	00:04:22	उत्तराषाढ़ा	1	21	गुरु	सूर्य	मंगळ	सम राशि
राहु	व		मक	13:37:02	00:02:57	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	राहु	मित्र राशि
केतु	व		कर्क	13:37:02	00:02:57	पुष्य	4	8	चंद्र	शनि	राहु	मित्र राशि
हर्ष	व		धनु	13:34:33	00:02:24	पूर्वाषाढ़ा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	----
नेप	व		धनु	19:25:22	00:01:37	पूर्वाषाढ़ा	2	20	गुरु	शुक्र	राहु	----
प्लूटो	व		तुला	21:20:27	00:00:37	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	गुरु	----
दशम भाव			कुंभ	12:58:21	--	शतभिषा	--	24	शनि	राहु	बुध	--

व – वक्री स – स्थिर
अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट
लाहिरी अयनांश : 23:43:42

लग्न–चलित

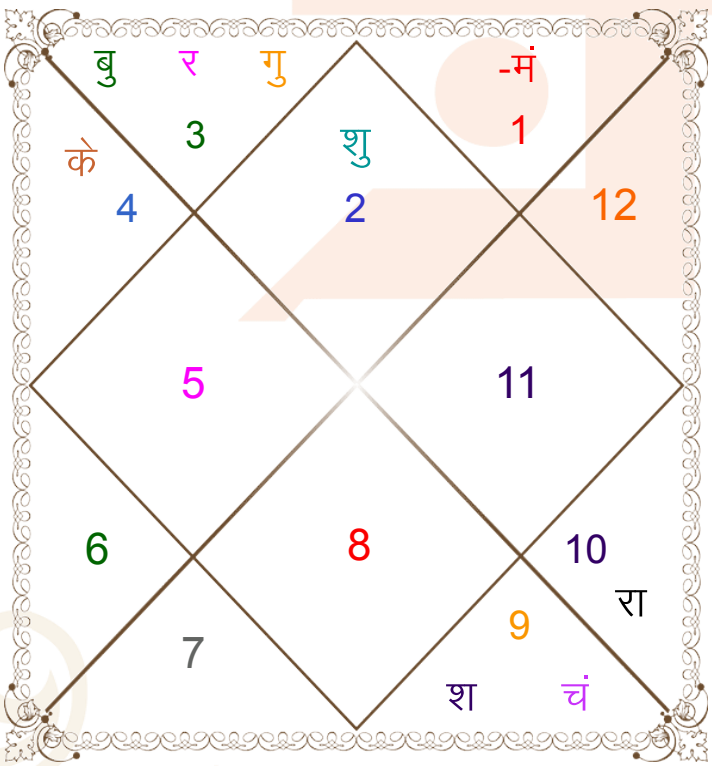

चन्द्र कुंडली

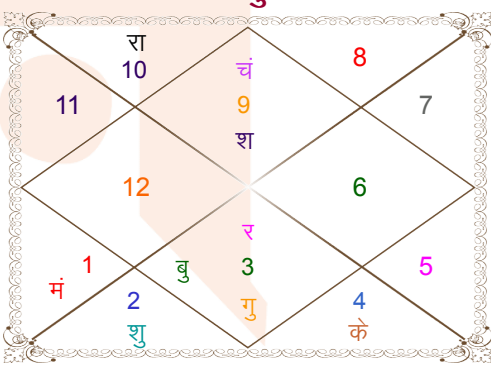

नवमांश कुंडली

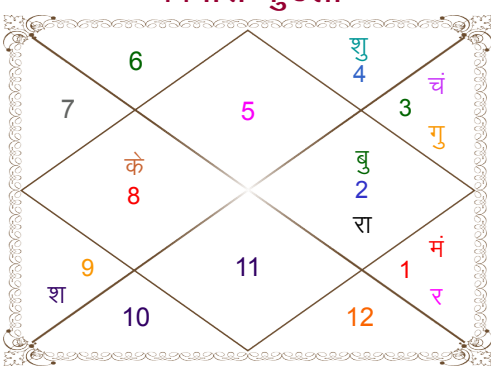

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	वृषभ	07:51:10	वृषभ	24:49:44
2	मिथुन	07:51:10	मिथुन	20:52:37
3	कर्क	03:54:03	कर्क	16:55:29
4	कर्क	29:56:55	सिंह	12:58:21
5	सिंह	29:56:55	कन्या	16:55:29
6	तुला	03:54:03	तुला	20:52:37
7	वृश्चिक	07:51:10	वृश्चिक	24:49:44
8	धनु	07:51:10	धनु	20:52:37
9	मकर	03:54:03	मकर	16:55:29
10	मकर	29:56:55	कुम्भ	12:58:21
11	कुम्भ	29:56:55	मीन	16:55:29
12	मेष	03:54:03	मेष	20:52:37

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृषभ	24:49:44
2	मिथुन	19:35:21
3	कर्क	14:38:30
4	सिंह	12:58:21
5	कन्या	15:58:55
6	तुला	21:23:11
7	वृश्चिक	24:49:44
8	धनु	19:35:21
9	मकर	14:38:30
10	कुम्भ	12:58:21
11	मीन	15:58:55
12	मेष	21:23:11

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
मघा	पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा

चलित कुंडली

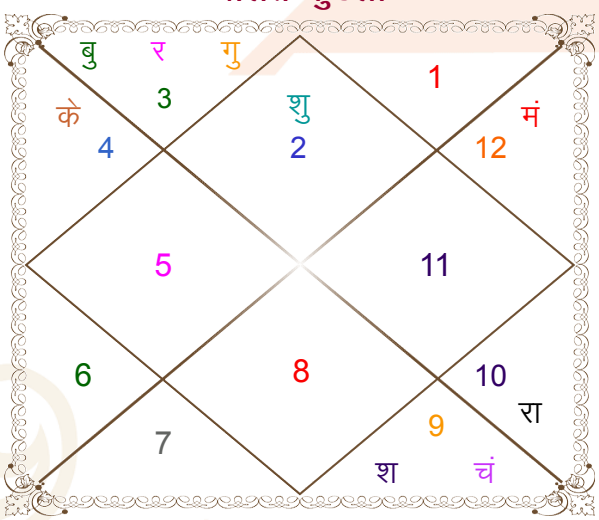

भाव कुंडली

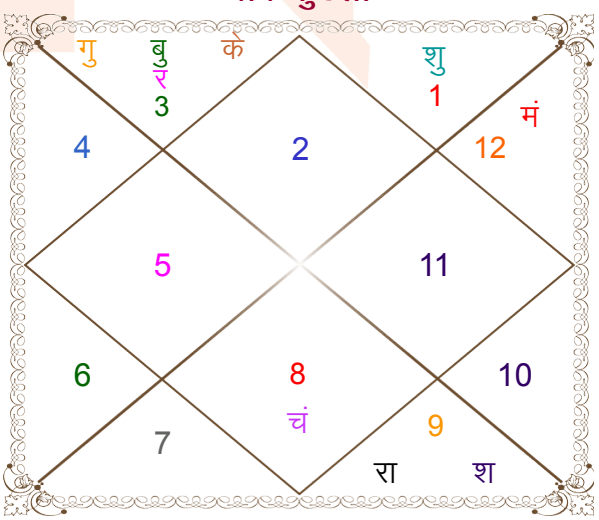

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	——— कारक ———		——— अवस्था ———				
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	मातृ	पितृ	वृद्ध	शान्त	गमन	3.03	16 %
चंद्र	ज्ञाति	मातृ	कुमार	निपीदित	नृत्यलिप्सा	0.88	67 %
मंगळ	कलत्र	भ्रातृ	बाल	स्वस्थ	सभा	6.42	46 %
बुध	भ्रातृ	ज्ञाति	मृत	विकल	निद्रा	0.00	57 %
गुरु	अमात्य	धन	मृत	विकल	सभा	0.00	56 %
शुक्र	पुत्र	कलत्र	कुमार	स्वस्थ	प्रकाश	8.44	48 %
शनि	आत्मा	आयुष्य	मृत	निपीदित	सभा	1.54	36 %
राहु	———	ज्ञान	युवा	मुदित	आगम	0.00	25 %
केतु	———	मोक्ष	युवा	मुदित	प्रकाश	0.00	25 %
एकुण						**20.31**	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
मघा	पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा

चलित कुंडली

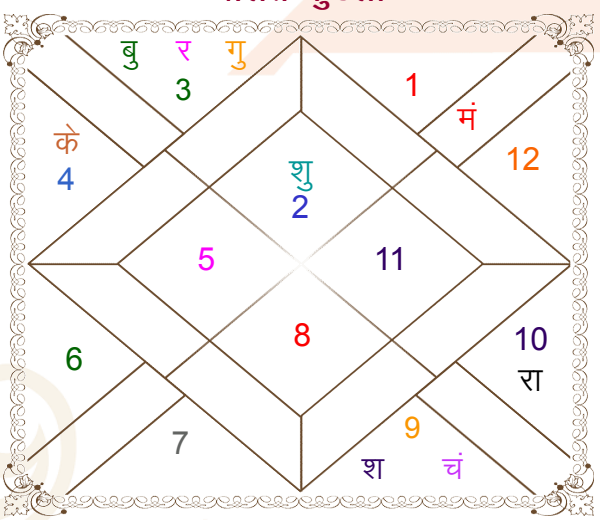

लग्न–चलित

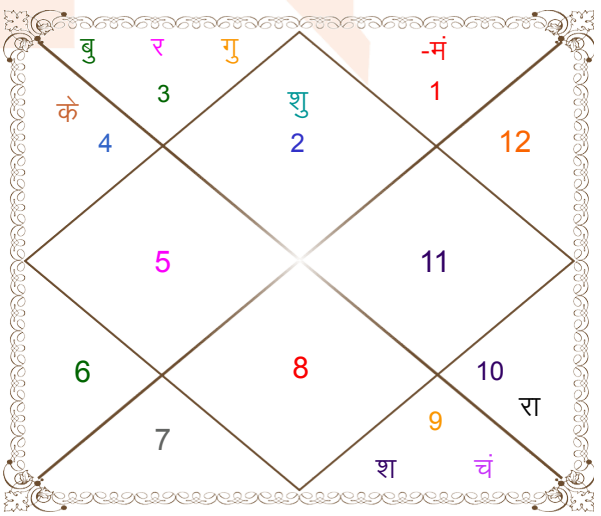

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा वेल : केतु 2 वर्ष 8 महिना 7 दिवस

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगळ 7 वर्ष	
07/07/1990		14/03/1993		14/03/2013		15/03/2019		14/03/2029	
14/03/1993		14/03/2013		15/03/2019		14/03/2029		14/03/2036	
	00/00/0000	शुक्र	14/07/1996	सूर्य	02/07/2013	चंद्र	13/01/2020	मंगळ	10/08/2029
	00/00/0000	सूर्य	14/07/1997	चंद्र	31/12/2013	मंगळ	13/08/2020	राहु	29/08/2030
	00/00/0000	चंद्र	15/03/1999	मंगळ	08/05/2014	राहु	12/02/2022	गुरु	05/08/2031
	00/00/0000	मंगळ	14/05/2000	राहु	02/04/2015	गुरु	14/06/2023	शनि	13/09/2032
	00/00/0000	राहु	15/05/2003	गुरु	19/01/2016	शनि	12/01/2025	बुध	10/09/2033
	07/07/1990	गुरु	13/01/2006	शनि	31/12/2016	बुध	14/06/2026	केतु	06/02/2034
गुरु	06/02/1991	शनि	14/03/2009	बुध	07/11/2017	केतु	13/01/2027	शुक्र	08/04/2035
शनि	17/03/1992	बुध	13/01/2012	केतु	14/03/2018	शुक्र	13/09/2028	सूर्य	14/08/2035
बुध	14/03/1993	केतु	14/03/2013	शुक्र	15/03/2019	सूर्य	14/03/2029	चंद्र	14/03/2036

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
14/03/2036		14/03/2054		14/03/2070		14/03/2089		15/03/2106	
14/03/2054		14/03/2070		14/03/2089		15/03/2106		00/00/0000	
राहु	25/11/2038	गुरु	02/05/2056	शनि	17/03/2073	बुध	11/08/2091	केतु	12/08/2106
गुरु	20/04/2041	शनि	13/11/2058	बुध	25/11/2075	केतु	07/08/2092	शुक्र	12/10/2107
शनि	25/02/2044	बुध	18/02/2061	केतु	03/01/2077	शुक्र	08/06/2095	सूर्य	17/02/2108
बुध	13/09/2046	केतु	25/01/2062	शुक्र	05/03/2080	सूर्य	13/04/2096	चंद्र	17/09/2108
केतु	02/10/2047	शुक्र	25/09/2064	सूर्य	15/02/2081	चंद्र	13/09/2097	मंगळ	13/02/2109
शुक्र	01/10/2050	सूर्य	14/07/2065	चंद्र	16/09/2082	मंगळ	10/09/2098	राहु	03/03/2110
सूर्य	26/08/2051	चंद्र	13/11/2066	मंगळ	26/10/2083	राहु	30/03/2101	गुरु	08/07/2110
चंद्र	24/02/2053	मंगळ	20/10/2067	राहु	01/09/2086	गुरु	06/07/2103		00/00/0000
मंगळ	14/03/2054	राहु	14/03/2070	गुरु	14/03/2089	शनि	15/03/2106		00/00/0000

- वरील दशा चन्द्रमा चे अंशा चे आधार वर्ती दीलेली आहे. भयात भभोग चे आधार अनुसार दशाच्या भोग्यकाल केतु 2 वर्ष 8 मा 4 दि होता आहेत.
- वरील दिनांक दशा समाप्ति चा समय दाखवते. विंशोत्तरी दशा पूर्ण 120 वर्षाची बिना आयुनिर्णय दिलेली आहे.

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगळ - मंगळ	
12/01/2025		14/06/2026		13/01/2027		13/09/2028		14/03/2029	
14/06/2026		13/01/2027		13/09/2028		14/03/2029		10/08/2029	
बुध	27/03/2025	केतु	26/06/2026	शुक्र	24/04/2027	सूर्य	22/09/2028	मंगळ	23/03/2029
केतु	26/04/2025	शुक्र	01/08/2026	सूर्य	25/05/2027	चंद्र	07/10/2028	राहु	14/04/2029
शुक्र	21/07/2025	सूर्य	11/08/2026	चंद्र	14/07/2027	मंगळ	18/10/2028	गुरु	04/05/2029
सूर्य	16/08/2025	चंद्र	29/08/2026	मंगळ	19/08/2027	राहु	14/11/2028	शनि	28/05/2029
चंद्र	28/09/2025	मंगळ	11/09/2026	राहु	18/11/2027	गुरु	08/12/2028	बुध	18/06/2029
मंगळ	28/10/2025	राहु	13/10/2026	गुरु	07/02/2028	शनि	06/01/2029	केतु	27/06/2029
राहु	14/01/2026	गुरु	10/11/2026	शनि	14/05/2028	बुध	01/02/2029	शुक्र	22/07/2029
गुरु	24/03/2026	शनि	14/12/2026	बुध	08/08/2028	केतु	12/02/2029	सूर्य	29/07/2029
शनि	14/06/2026	बुध	13/01/2027	केतु	13/09/2028	शुक्र	14/03/2029	चंद्र	10/08/2029

मंगळ - राहु		मंगळ - गुरु		मंगळ - शनि		मंगळ - बुध		मंगळ - केतु	
10/08/2029		29/08/2030		05/08/2031		13/09/2032		10/09/2033	
29/08/2030		05/08/2031		13/09/2032		10/09/2033		06/02/2034	
राहु	07/10/2029	गुरु	13/10/2030	शनि	08/10/2031	बुध	03/11/2032	केतु	19/09/2033
गुरु	27/11/2029	शनि	06/12/2030	बुध	04/12/2031	केतु	24/11/2032	शुक्र	13/10/2033
शनि	27/01/2030	बुध	24/01/2031	केतु	28/12/2031	शुक्र	23/01/2033	सूर्य	21/10/2033
बुध	22/03/2030	केतु	13/02/2031	शुक्र	04/03/2032	सूर्य	11/02/2033	चंद्र	02/11/2033
केतु	13/04/2030	शुक्र	10/04/2031	सूर्य	25/03/2032	चंद्र	13/03/2033	मंगळ	11/11/2033
शुक्र	16/06/2030	सूर्य	27/04/2031	चंद्र	27/04/2032	मंगळ	03/04/2033	राहु	03/12/2033
सूर्य	06/07/2030	चंद्र	26/05/2031	मंगळ	21/05/2032	राहु	27/05/2033	गुरु	23/12/2033
चंद्र	07/08/2030	मंगळ	15/06/2031	राहु	21/07/2032	गुरु	14/07/2033	शनि	16/01/2034
मंगळ	29/08/2030	राहु	05/08/2031	गुरु	13/09/2032	शनि	10/09/2033	बुध	06/02/2034

मंगळ - शुक्र		मंगळ - सूर्य		मंगळ - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु	
06/02/2034		08/04/2035		14/08/2035		14/03/2036		25/11/2038	
08/04/2035		14/08/2035		14/03/2036		25/11/2038		20/04/2041	
शुक्र	18/04/2034	सूर्य	14/04/2035	चंद्र	01/09/2035	राहु	09/08/2036	गुरु	22/03/2039
सूर्य	09/05/2034	चंद्र	25/04/2035	मंगळ	13/09/2035	गुरु	18/12/2036	शनि	08/08/2039
चंद्र	14/06/2034	मंगळ	03/05/2035	राहु	15/10/2035	शनि	24/05/2037	बुध	10/12/2039
मंगळ	09/07/2034	राहु	22/05/2035	गुरु	12/11/2035	बुध	10/10/2037	केतु	30/01/2040
राहु	11/09/2034	गुरु	08/06/2035	शनि	16/12/2035	केतु	07/12/2037	शुक्र	24/06/2040
गुरु	06/11/2034	शनि	28/06/2035	बुध	15/01/2036	शुक्र	20/05/2038	सूर्य	07/08/2040
शनि	13/01/2035	बुध	16/07/2035	केतु	28/01/2036	सूर्य	08/07/2038	चंद्र	19/10/2040
बुध	14/03/2035	केतु	24/07/2035	शुक्र	03/03/2036	चंद्र	29/09/2038	मंगळ	09/12/2040
केतु	08/04/2035	शुक्र	14/08/2035	सूर्य	14/03/2036	मंगळ	25/11/2038	राहु	20/04/2041

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य	
20/04/2041		25/02/2044		13/09/2046		02/10/2047		01/10/2050	
25/02/2044		13/09/2046		02/10/2047		01/10/2050		26/08/2051	
शनि	02/10/2041	बुध	06/07/2044	केतु	05/10/2046	शुक्र	01/04/2048	सूर्य	18/10/2050
बुध	26/02/2042	केतु	29/08/2044	शुक्र	08/12/2046	सूर्य	26/05/2048	चंद्र	14/11/2050
केतु	28/04/2042	शुक्र	31/01/2045	सूर्य	28/12/2046	चंद्र	25/08/2048	मंगळ	03/12/2050
शुक्र	18/10/2042	सूर्य	19/03/2045	चंद्र	29/01/2047	मंगळ	28/10/2048	राहु	22/01/2051
सूर्य	09/12/2042	चंद्र	04/06/2045	मंगळ	20/02/2047	राहु	11/04/2049	गुरु	07/03/2051
चंद्र	06/03/2043	मंगळ	29/07/2045	राहु	18/04/2047	गुरु	04/09/2049	शनि	28/04/2051
मंगळ	06/05/2043	राहु	15/12/2045	गुरु	09/06/2047	शनि	24/02/2050	बुध	13/06/2051
राहु	09/10/2043	गुरु	19/04/2046	शनि	08/08/2047	बुध	29/07/2050	केतु	02/07/2051
गुरु	25/02/2044	शनि	13/09/2046	बुध	02/10/2047	केतु	01/10/2050	शुक्र	26/08/2051

राहु - चंद्र		राहु - मंगळ		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध	
26/08/2051		24/02/2053		14/03/2054		02/05/2056		13/11/2058	
24/02/2053		14/03/2054		02/05/2056		13/11/2058		18/02/2061	
चंद्र	11/10/2051	मंगळ	18/03/2053	गुरु	26/06/2054	शनि	25/09/2056	बुध	10/03/2059
मंगळ	12/11/2051	राहु	15/05/2053	शनि	28/10/2054	बुध	03/02/2057	केतु	28/04/2059
राहु	02/02/2052	गुरु	05/07/2053	बुध	15/02/2055	केतु	29/03/2057	शुक्र	13/09/2059
गुरु	15/04/2052	शनि	04/09/2053	केतु	02/04/2055	शुक्र	30/08/2057	सूर्य	24/10/2059
शनि	11/07/2052	बुध	28/10/2053	शुक्र	09/08/2055	सूर्य	16/10/2057	चंद्र	01/01/2060
बुध	26/09/2052	केतु	19/11/2053	सूर्य	17/09/2055	चंद्र	01/01/2058	मंगळ	18/02/2060
केतु	28/10/2052	शुक्र	22/01/2054	चंद्र	21/11/2055	मंगळ	24/02/2058	राहु	21/06/2060
शुक्र	28/01/2053	सूर्य	11/02/2054	मंगळ	06/01/2056	राहु	13/07/2058	गुरु	10/10/2060
सूर्य	24/02/2053	चंद्र	14/03/2054	राहु	02/05/2056	गुरु	13/11/2058	शनि	18/02/2061

गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगळ	
18/02/2061		25/01/2062		25/09/2064		14/07/2065		13/11/2066	
25/01/2062		25/09/2064		14/07/2065		13/11/2066		20/10/2067	
केतु	10/03/2061	शुक्र	06/07/2062	सूर्य	09/10/2064	चंद्र	24/08/2065	मंगळ	03/12/2066
शुक्र	06/05/2061	सूर्य	24/08/2062	चंद्र	03/11/2064	मंगळ	21/09/2065	राहु	23/01/2067
सूर्य	23/05/2061	चंद्र	13/11/2062	मंगळ	20/11/2064	राहु	03/12/2065	गुरु	09/03/2067
चंद्र	20/06/2061	मंगळ	09/01/2063	राहु	03/01/2065	गुरु	06/02/2066	शनि	02/05/2067
मंगळ	10/07/2061	राहु	04/06/2063	गुरु	11/02/2065	शनि	24/04/2066	बुध	20/06/2067
राहु	30/08/2061	गुरु	12/10/2063	शनि	29/03/2065	बुध	02/07/2066	केतु	10/07/2067
गुरु	15/10/2061	शनि	14/03/2064	बुध	09/05/2065	केतु	30/07/2066	शुक्र	04/09/2067
शनि	07/12/2061	बुध	30/07/2064	केतु	26/05/2065	शुक्र	20/10/2066	सूर्य	21/09/2067
बुध	25/01/2062	केतु	25/09/2064	शुक्र	14/07/2065	सूर्य	13/11/2066	चंद्र	20/10/2067

शुभाशुभ ज्ञान

शुभाशुभ ज्ञान करण्याची आपणास आपल्या मित्र व शत्रुविषयी बोध करते. मूलांक, भाग्यांक व, मित्रांकद्वारे मैत्री व भागीदारी करण्यात फायदा होईल, त्याच प्रमाणे शुभ दिवस व शुभवर्ष प्रगतिकारक ठरेल, शुभग्रहांची, दशा सुद्धा लाभकारक धरते, मित्रलग्न व मित्रराशि लाभदायक अस्ते.

शुभरत्न व धातु तसेच रंग धारण केल्याने शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य लाभते, भाग्य रत्न धारण केल्याने भाग्यवृद्धि होते. शुभ वेली कोणत्याही कार्यांचा आरम्भ केल्याने अपेक्षित यश मिलते. इष्टदेव–देवतांचे ध्यान व जप केल्याने मानसिक शक्ति वाढते व यश लवकर मिलते. शुभ पदार्थ, अन्न, द्रव्य इत्यादि चे दान केल्याने ही शुभफल मिलते. व्यापार–उधोग शुभ दिशेला केल्यास त्यात भरभराट होउन अपेक्षत लाभ होतो. शुभ–अशुभ ज्ञानाचा प्रयोग दैनंदिन जीवनात शुभफलदायी ठरतो.

मूलांक	7
भाग्यांक	6
मित्र अंक	2, 3, 6, 7
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	25,34,43,52,61
शुभ दिवस	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	मीन, सिंह
मित्र लग्न	सिंह, मकर, मीन
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, सुनहरा हकीक
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सकाली
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	तांदुल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं. वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं. यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है. ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो. यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो. मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है. बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है. चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है. उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है. साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है. विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है. जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए. जिन्हें 50–75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए. जो रत्न केवल 25–50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए. अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	93%	धन, सन्तति सुख
हीरा	शुक्र	89%	स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
माणिक्य	सूर्य	70%	धन, सुख
नीलम	शनि	64%	दुर्घटणा पासून सुरक्षा, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
गोमेद	राहु	50%	भाग्योदय, दुर्घटणा पासून सुरक्षा
पुष्कराज	गुरु	22%	धन हानि, दुर्घटना, हानि
लहसुनिया	केतु	9%	पराक्रम हानि, दुर्घटना
मोती	चंद्र	0%	दुर्घटना, पराक्रम हानि
पोवले	मंगळ	0%	व्यय, दाम्पत्य कष्ट

रत्न की शुभता

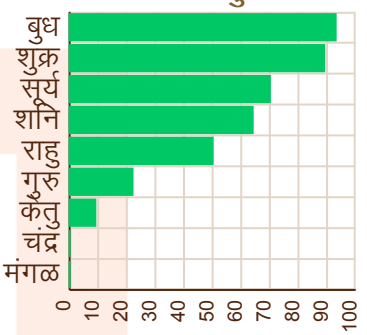

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	पोवले	पन्ना	पुष्कराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
केतु	14/03/1993	58%	0%	0%	93%	22%	95%	52%	25%	34%
शुक्र	14/03/2013	58%	0%	0%	100%	22%	100%	70%	56%	22%
सूर्य	15/03/2019	83%	6%	0%	93%	34%	76%	52%	25%	0%
चंद्र	14/03/2029	77%	19%	0%	100%	22%	89%	64%	25%	0%
मंगळ	14/03/2036	77%	6%	4%	81%	34%	89%	64%	25%	22%
राहु	14/03/2054	58%	0%	0%	93%	22%	95%	70%	62%	0%
गुरु	14/03/2070	77%	6%	0%	81%	47%	76%	64%	50%	9%
शनि	14/03/2089	58%	0%	0%	100%	22%	95%	77%	56%	0%
बुध	15/03/2106	77%	0%	0%	100%	22%	95%	64%	50%	9%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह–नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए पन्ना व हीरा रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

हीरा आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

पन्ना आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए माणिक्य, नीलम एवं गोमेद रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

पुखराज, लहसुनिया, मोती व मूंगा रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध द्वितीय भाव में स्थित है। इसलिए आपके लिए बुध रत्न पन्ना धारण करना उत्तम फलदायक रहेगा। पन्ना रत्न धारण करने से आपकी नियोजन क्षमता बेहतर होगी। आपकी कार्य योजनाएं सुव्यवस्थित होंगी। रत्न पन्ना आपकी वाकशक्ति, धन, विद्या, कुटुम्ब सुख की वृद्धि करेगा। सभा में अपनी बात कहने की योग्यता का विकास होगा। इसे धारण करने पर आप लोगों को अपनी बातों से प्रभावित करने में सफल हो पायेंगे। रत्न पन्ना आपको सुविचारक या वक्ता बनाने में सहयोग करेगा। बुद्धि से धनार्जन में पन्ना रत्न उपयोगी साबित होगा।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में बुध द्वितीयेश एवं पंचमेश है। पन्ना रत्न धारण कर आप बुध ग्रह की शुभता प्राप्त कर सकते है। पन्ना रत्न आपको उद्धोग-व्यापार द्वारा सम्मान दिला सकता है। पन्ना रत्न बौद्धिक योग्यता से धन संचय दे सकता है। पारिवारिक कलह को दूर करने का कार्य भी पन्ना रत्न कर सकता है। यह रत्न आपको संतान पक्ष से सुखी कर सकता है. तथा यह रत्न आपको विद्या, बुद्धि, प्रतिष्ठा, धन-धान्य, प्रतियोगिताओं में सफलता, श्रेष्ठ पद पर आसीन, विलक्षण रूप से तीव्र बुद्धि एवं राजनैतिक कार्यो से लाभ दिला सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र लग्न भाव में स्थित है। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। यह रत्न प्रेम, आकर्षण एवं विपरीत लिंग विषयों में सफलता देगा। हीरा रत्न से धन संचय करना आपके लिए सहज होगा। शुक्र लग्न भाव से सप्तम भाव को प्रभावित कर रहे है। इसलिए शुक्र रत्न हीरा धारण कर आप वैवाहिक जीवन को अनुकूल बनाये रख सकते है। यह हीरा रत्न पारिवारिक सुख-समृद्धि, स्वतंत्र व्यापार में लाभदायक सिद्ध होगा। नियमानुसार धारण किया गया हीरा आपको सुख, ऐश्वर्य, सम्मान, वैभव, विलासिता आदि दे सकता है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में शुक्र लग्नेश एवं षष्ठेश है। शुक्र आपके लग्न भाव के स्वामी होने के कारण सबसे शुभ ग्रह है। शुक्र रत्न हीरा धारण कर आप अपने स्वास्थ्य सुख को बेहतर कर सकते है। शुक्र रत्न हीरा आपको रोगों से मुक्त रखने में सहयोग करेगा।

हीरा रत्न की शुभता से आपके आत्मबल में बढ़ोतरी हो सकती है। रत्न प्रभाव से आप अपने शत्रुओं पर विजय पाने में सफल रहेंगे। हीरा रत्न अनुकूल फलदायक होने के कारण आपके दांपत्य जीवन को सुखी, भौतिक सुख-सुविधाओं से युक्त तथा प्रतियोगिताओं में सफल हो सकते है.

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। सूर्य रत्न माणिक्य आपको संपत्तिवान, भाग्यवान एवं कुटुंब प्रेमी बनायेगा। माणिक्य रत्न के शुभत्व से आपके लिए धन संचय करना आपके लिए सहज होगा। यह रत्न आपको आत्मनिर्भर रहने में सहयोग करेगा। सरकारी कार्यो में सफलता देगा। हड्डियों से जुड़े रोगो से मुक्त रखने में सहयोग करेगा। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने से सूर्य की शुभता बढ़ती है। तथा पीड़ा कम होती है। इसलिए सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना अनुकूल रहेगा।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में सूर्य चतुर्थ भाव का स्वामी है। सूर्य आपके लिए केन्द्रेश, सुखेश ग्रह है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप घर, जमीन, जायदाद पैतृक सम्पति, वाहन, माता और जमीन के सुख प्राप्त कर सकते है। सूर्य चतुर्थेश होने के कारण माणिक्य रत्न आपके शैक्षिक ज्ञान का भी विकास करने में सक्षम है। सूर्य की शुभता पाने के लिए आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न शुभ होने के कारण आपकी वैचारिक शक्ति, निर्णय शक्ति, योग्यता और कार्यक्षमता देगा। माणिक्य रत्न आपको विद्या, बुद्धि, मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक, अध्यात्मिक और आत्मिक बल प्रदान कर सकता है।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि अष्टम भाव में स्थित है। शनि ग्रह की सभी शुभता प्राप्त करने के लिए आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम आपको विद्वान वाकपटु और दयालु बनायेगा। नीलम शुभता से आप निर्भय चतुर और उदार प्रकृति के व्यक्ति बनेंगे। विवाह के माध्यम से आपको आर्थिक लाभ की प्राप्ति हो सकती है। रत्न शुभता से आपको उत्तराधिकार में जमीन की प्राप्ति हो सकती है। इसके अलावा नीलम रत्न की शुभता आपको गूढशास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करने में सहयोगी सिद्ध होगी।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में शनि नवमेश एवं दशमेश है। शनि लग्नेश शुक्र के मित्र एवं योगकारक ग्रह है। आपके लिए शनि सबसे शुभ ग्रह है। शनि रत्न नीलम धारण कर आप अपना भाग्योदय कर सकते है। नीलम रत्न की शक्तियां आपके माता-पिता के सुखों में बढ़ोतरी कर सकती है। यह रत्न शुभ होकर आपको भूमि, भवन, संपति के मामलों का सहज समाधान दे सकता है। नीलम रत्न की शुभता से आपकी आजीविका के कार्य बिना बाधाएं समय पर पूरे हो सकते है। लाभ क्षेत्र की कठिनाईयों को दूर करने में भी नीलम रत्न उपयोगी सिद्ध हो सकता है। विदेश स्थानों से आय प्राप्ति के योग बना सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु नवम भाव में स्थित है। राहु ग्रह की शुभता बढ़ाने के लिए आप गोमेद रत्न धारण करें। गोमेद रत्न शुभता से आप परिश्रमी और ईश्वर पर श्रद्धावान बनेंगे। रत्न शुभता से आप सभ्य और सहृदय व्यक्ति बनेंगे। यह रत्न आपको सुधारवादी विचार वाले, उन्नति आत्मशक्ति वाले और जगत के कल्याण के लिए प्रयत्नशील व्यक्ति बना सकता है। यात्राओं को सुखद बनाने के लिए भी आप गोमेद रत्न धारण कर सकते है। विद्वान और

पूज्यनीय व्यक्तियों के संपर्क में आने के अवसर यह रत्न आपको दे सकता है।

राहु मकर राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि अष्टम भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपकी कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। यह रत्न आपको चोट एवं दुर्घटनाओं से बचाएगा। रत्न शुभता से आप अपनी ऊर्जा शक्ति का उपयोग देशहित के कार्यों में करेंगे तथा इस रत्न को पहनने से पैतृक सम्पति की प्राप्ति के योग बनेंगे। यह रत्न आपको स्वजनों के निकट रहने का सुख देगा। आप का शरीर पुष्ट और बलशाली होगा। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको आय क्षेत्रों में नियमितता देगा। आप शुभ कर्मो की ओर अग्रसर होंगे। यह रत्न आपको उदर रोग, गुदा रोग और अत्यधिक रक्त प्रवाह की हानि से बचाएगा। साथ ही रत्न शुभता आपको असमय मृत्यु भय से मुक्त करेगी।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु द्वितीय भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः पुखराज रत्न को धारण करने पर आपको टैक्स निर्धारण की त्रुटि के कारण परेशानी हो सकती है। आर्थिक स्थिति में गिरावट की स्थिति बन सकती है। सरकारी वसूली आपके धैर्य और विवेक को प्रभावित कर सकती है। उद्धोग धंधों की मनोकूल प्रगति नहीं हो पाएगी। यह रत्न सोना, चांदी, सरकारी नौकरी, कानूनी काम, बैंक, शिक्षा संस्थान, देवालय, धर्म संस्था आदि माध्यमों से आपको धन और यश की हानि करा सकता है। धन संग्रह और संचय में सामान्य से अधिक प्रयास करने पड़ सकते है। वाणी में विनम्रता का अभाव आ सकता है। आप सम्मान के प्रति विशेष सजग रहेंगे।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में गुरु अष्टमेश एवं आयेश है। गुरु अष्ट्मेश है इसलिए इस ग्रह का रत्न धारण करना आपको प्रतिकूल फल दे सकता है। गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आपको स्वास्थ्य में कमी का सामना करना पड़ सकता है। इस रत्न से व्याधी, आयु में कमी, मानसिक चिंता, नास्तिकता, नकारात्मक विचारधारा और दुर्भाग्य की स्थितियां बन सकती है। इसके अलावा अष्टम भाव का रत्न आपको दरिद्रता, आलस्य, अस्पताल एवं चीरफाड़ आदि जैसी परेशानियां भी दे सकता है। रत्न का अनुकूल न होने के कारण आपको आय, लाभ वृद्धि में आपको योग्यता की कमी का अनुभव हो सकता है। पुखराज रत्न धारण से

आप के बड़े भाई से संबंध कुछ प्रभावित हो सकते है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु तीसरे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया धारण करने पर आपकी धैर्यशक्ति और दानशीलता प्रभावित हो सकती है। यह रत्न आपके बल, धन एवं यश में कमी करेगा। खान-पान का पूर्ण सुख आपको नहीं मिल पाएगा। शत्रु आपको समय समय पर परेशान कर सकते है। शत्रु भय के कारण आपके जीवन की अनेक गतिविधियां बाधित हो सकती है। व्यर्थ की चिंताओं का आगमन आपके जीवन में हो सकता है। गोमेद रत्न के प्रभाव से आपको अनजान भय का सामना करना पड़ सकता है। भ्रम और चिंता से व्याकुलता का अनुभव आपको होगा।

केतु कर्क राशि में स्थित है व इसका स्वामी चन्द्र आठवें भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपकी आयु में कमी होगी। आप असाध्य रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। बुरे मित्रों से आपके संबंध हो सकते हैं। यह रत्न आपमें साहस की कमी करेगा तथा आपमें उतावलापन देगा। धन संचय करना आपके लिए बेहद कठिन होगा। इस रत्न से आपके मान-सम्मान में कमी हो सकती है। यह रत्न आपकी वृद्धावस्था में कष्ट का कारण बन सकता है। रत्न प्रतिकूलता आपकी भाषा में अशिष्टता का भाव देगी। इस रत्न को पहनकर आप दुरुसाधनों से धन संचय का प्रयास करेंगे। यह रत्न आपको अवैध धन कमाने की ओर अग्रसर करेगा।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती पहनने पर जल संबंधित रोगों का भय आपको हो सकता है। आपमें ईष्र्या भाव आ सकता है। मातृ सुख बाधित हो सकता है। मोती रत्न प्रभाव से आपको फेफड़ों संबंधित परेशानियां हो सकती है। यह रत्न आपको मनोविकार, चिन्ता नजला जुकाम व खांसी भी दे सकता है। मोती रत्न प्रभाव से आपकी माता के स्वास्थ्य में कमी हो सकती है। ससुराल पक्ष से स्नेह प्रभावित हो सकता है। माता के साथ आपके संबंध अपेक्षाकृत बहुत अनुकूल नहीं रहेंगे। मोती रत्न धारण करने पर आपको किसी बंधन के कारण दुःख का सामना करना पड सकता है। विषय वासना के प्रति आपकी रुचि अधिक हो सकती है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में चंद्र तृतीय भाव का स्वामी है। चंद्र ग्रह की शुभता प्राप्ति एवं अशुभता में कमी के लिए आपका चंद्र रत्न मोती धारण करना उचित नहीं होगा। इस रत्न को धारण करने पर आपके द्वारा अभक्ष्य पदार्थो का सेवन एवं आपमें क्रोध भाव की अधिकता हो सकती है। इस रत्न के प्रभाव से आपका आलोचनात्मक व्यवहार, पुरुषार्थ, साहस और शौर्य की कमी आपमें हो सकती है। खांसी तथा छाती के रोग आपको स्वास्थ्य विकार दे सकते है। यह रत्न आपके मानसिक क्लेश बढ़ा सकता है। रत्न धारण के बाद आपके द्वारा किये गये कार्यो में बाहुबल की प्रमुखता हो सकती है। धन संचय में परेशानियां बनी रह सकती है। रत्न प्रभाव आपके स्वास्थ्य सुख में कमी कर सकता है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल बारहवें भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आपमें साहस एवं हिम्मत की कमी हो सकती है। इसके कारण जीवन में आने वाले विपरीत समय का आप साहस के साथ मुकाबला नहीं कर पाएंगे। मूंगा रत्न आपको झूठे दोषारोपण दे सकता है। इसके अलावा रत्न प्रभाव से आपको गुप्त चोटें भी लग सकती है। इस रत्न के प्रभाव से आपकी गुरु भक्ति भावना में कमी भी संभावित है। इस रत्न से आपका स्वयं पर विश्वास कुछ कम हो सकता है। आप स्वयं को असफल मान सकते है। वैवाहिक जीवन में सुख की कमी हो सकती है। मूंगा रत्न धारण पर आपके जीवन की उन्नति प्रतियोगियों के कारण प्रभावित हो सकती है। रत्न प्रभाव से आपके रोग, ऋण और विरोधी अधिक प्रभावी हो सकते है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में मंगल सप्तमेश और द्वादशेश है। अशुभ भावों का स्वामित्व प्राप्त होने के कारण मंगल आपको शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः आपके द्वारा मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आप निद्रा की कमी का अनुभव करेंगे। यह रत्न आपके वैवाहिक जीवन को तनाव पूर्ण और गृह कलेश से युक्त कर सकता है। रत्न प्रभाव से चोरी, झगड़ा, उपद्रव आदि विषयों में आपकी रुचि अधिक हो सकती है। यह रत्न आपकी कामवासना में उत्तरोत्तर वृद्धि करेगा। आपके पारिवारिक जीवन में अशांति का माहौल हो सकता है। बढ़ते हुए व्यय आपकी ग्रहस्थ जीवन को ओर अधिक कष्टमय बना सकते है। व्ययों का केन्द्र विशेष रूप से ग्रहस्थ जीवन हो सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

चन्द्र
(15/03/2019 - 14/03/2029)

चन्द्र की दशा में आपका पन्ना, हीरा व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न नेष्ट हैं और पुखराज, मोती, मूंगा व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(14/03/2029 - 14/03/2036)

मंगल की दशा में आपका हीरा, पन्ना व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज व गोमेद रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया, मोती व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(14/03/2036 - 14/03/2054)

राहु की दशा में आपका हीरा व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, गोमेद व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज, मोती, मूंगा व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(14/03/2054 - 14/03/2070)

गुरु की दशा में आपका पन्ना, माणिक्य व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया, मोती व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(14/03/2070 - 14/03/2089)

शनि की दशा में आपका पन्ना, हीरा व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज, मोती, मूंगा व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(14/03/2089 - 15/03/2106)

बुध की दशा में आपका पन्ना, हीरा व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज, लहसुनिया, मोती व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - टरक्वाइज

आपका जन्म वृष राशि के लग्न में हुआ है। जिसका स्वामी ग्रह शुक्र होता है। टरक्वाइज रत्न शनि ग्रह के लिये धारण किया जाता है और शनि वृष राशि के लग्न के जातकों के लिये भाग्य रत्न होता है। क्योंकि शनि की मकर राशि वृष लग्न से नवम भाव में स्थित होती है। किसी भी जातक के लिये भाग्य का प्रबल होना सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है क्योंकि किसी भी किये गये प्रयास या कार्य के परिणाम में भाग्य उत्प्रेरक का कार्य करता है, यह ठीक उसी प्रकार कार्य करता है जैसे किसी रासायनिक क्रिया में उत्प्रेरक का कार्य होता है।

अतः वृष राशि के लग्न वाले जातकों को टरक्वाइज रत्न धारण करके शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है तथा जातक के भाग्य को चमकाता है। वैसे भी शनि सेवक का प्रतिनिधि ग्रह है अर्थात यदि जातक सरकारी या प्राइवेट नौकरी में है तो नौकरी में प्रमोशन व आय वृद्धि के साथ-साथ अधिकार भी प्रदान करता है। साथ ही अन्य कर्मचारीगणों का सहयोग भी प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को सेवकों का सहयोग तथा अधीनस्थ कर्मचारियों की शुभकामनाऐं भी प्राप्त होती हैं। जिसको जोड़ों के रोग हों या लाइलाज रोगी हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा लाइलाज रोगों से मुक्ति दिलाता है।

टरक्वाइज को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है। टरक्वाइज शनि ग्रह का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सायंकाल शनि की होरा में धारण करना श्रेष्ठ होता है। शनिवार के दिन सूर्यास्त के समय शनि की होरा में धारण करना सर्वश्रेष्ठ माना गया है। टरक्वाइज को यदि शनिवार के साथ-साथ शनि के नक्षत्र अर्थात् पुष्य, अनुराधा और उ.भाद्रपद में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

टरक्वाइज को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर नीले या काले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, शनि के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

शनि का मंत्र - ऊँ शं शनैश्चराय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि शनि से संबंधित पदार्थ जैसे सरसों का तेल, काला उड़द सवा मीटर काला कपड़े का दान करें तो टरक्वाइज की अंगूठी धारण करना और भी

अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन शनि का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें। शनि मंदिर में शनिदेव की मूर्ति पर सरसों का तेल का अभिषेक करायें तो यह टरक्वाइज की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शनिवार को शनि चालीसा का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

वृष लग्न वाले जातक यदि टरक्वाइज की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन भाग्यशाली व्यक्ति के रूप में सुखी, समृद्धिशाली एवं शांतिपूर्ण जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली वृष लग्न की हैं। वृषभ लग्न आपको आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी बना रहा हैं। स्थिर लग्न होने से इनका स्वभाव स्थिरता लिये हुए होता है। आप जो भी कार्य करते हैं उसे पूरा करके ही हटते हैं। राशि चिह्न बैल होने की वजह से आप अत्यंत मेहनती हैं तथा लगातार कार्य करते रहना आपका व्यवहार हैं। प्यार से आप कुछ भी कर सकते हैं लेकिन जबरदस्ती करने पर आप बैल की भाँति अड़ियल हो जाते हैं, उस स्थिति में आपसे कुछ भी कराना मुश्किल होता है। पृथ्वी तत्व राशि होने से सहनशीलता का भाव आपमें कूट-कूट कर भरा है। जब तक आपसे सहन होता है, आप करते जाते हैं। योजनाबद्ध तरीके से कार्य करना आपको पसंद होता है। हर वस्तु को नियत स्थान पर रखना, हाथ में लिया गया प्रत्येक कार्य

पूर्ण करना, प्रत्येक सुन्दर वस्तु की ओर आप आसानी से आकर्षित हो जाते हैं।

त्रिक भावों के स्वामी अपने स्वामित्व के आधार पर स्वयं में अशुभता लिए होते हैं। 6,8,12 भावों को त्रिक भाव के नाम से जाना जाता हैं। इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

वृषभ लग्न में छठे भाव व लग्न भाव के स्वामी शुक्र हैं, शुक्र षष्टेश होने पर स्वास्थ्य, ऋण के पक्ष से शुभ नहीं हैं। जीवन में प्रगति की राहों में बाधक बनता हैं। सतत प्रयासों के उपरान्त आप बाधाएं समाप्त करने में सफल रहेंगे।

अष्टम व एकादश भाव के गुरु हैं। इस भाव में बृहस्पति की स्व और मूल त्रिकोण धनु राशि हैं। बृहस्पति की राशि बाधक और गुप्त विषयों से सम्बंधित भाव में होना, आपको आर्थिक, वितीय और प्रबंधकीय विषयों में छोटी, धोखा और अप्रत्याशित हानि दे सकती हैं। जीवन की घटनाओं में शुभता के पक्ष से गुरु की धनु राशि इस भाव में आपके पक्ष में शुभ फल नहीं दे रही हैं।

द्वादश व सप्तम भाव के मंगल हैं। वृषभ लग्न के लिए मंगल विशेष अशुभ ग्रह होते हैं। आपके लग्न में मंगल की एक राशि सप्तम भाव तथा दूसरी द्वादश भाव में आती हैं। द्वादश भाव में मंगल की राशि मंगल के कारक तत्वों में कमी करती हैं। सप्तमेश मंगल दुर्घटनाओं, शल्यचिकित्सा, लड़ाई-झगड़ों के योग बना कर ऊर्जा शक्ति की हानि करा सकता हैं।

अष्टम भाव संकट, चिंता और दुर्भाग्य का स्थान हैं, इस भाव में स्थित होने से चन्द्र बलहीन हो गया हैं। चन्द्र की इस स्थिति से आपको शिशु अवस्था में गंभीर स्वास्थ्य संकटों का सामना करना पड़ा होगा। मानसिक और दैहिक निर्बलता के कारण असफलता और अन्य कष्ट भोगने पड़ सकते हैं। निर्धनता, मातर कष्ट, घर, जमीन, जायदाद और पैतृक सम्पति से सम्बंधित विवाद हो सकता हैं। चन्द्र के प्रभाव से संपति सुख, विदेश स्थानों में हानि, अपयश पीड़ित हो सकते है।

शनि के अष्टम भाव में होने से आप दीर्घ अवधि के लिए रोगी हो सकते है, यह योग मानसिक सुखो में भी कमी कर रहा है। धन में कमी, व्यवसाय में हानि, पैतृक संपति प्राप्ति में बाधक, संतान कष्ट दे सकता है।

मंगल द्वादश भाव में है। पुरुषार्थ से किये गए सभी कार्य आपके सफल हो सकते है। आपका स्वभाव कठोर, शंकालु, असत्यभाषी, अल्प धर्मपरायण, शत्रुहन्ता, मामा को कष्ट, बाहर के लोगों द्वारा धन-नाश, वात- पित रोगी, और संतान जन्य चिंता दे सकता है ।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 3, 5, 6, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से

छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विषयी माहिती

गोचर शनि जेव्हां कुंडलीतीत चंद्राला बारावा, पहिला व दूसरा येईल, तेव्हा साडेसाती सुरु होते. कुंडलीतीत चन्द्राला गोचर शनि चौथा व आठवा आला असता, ढैय्या म्हणजे अडीचकी सुरु होते. साडेसाती चा प्रभाव साडेसात वर्ष व ढैय्या चा प्रभाव अडीच वर्षें मानला गेला आहे साडेसाती चा प्रभाव सामान्यापणे शारिरीक, मानसिक व आर्थिक त्रासाचा जातो तर काहीवेलप आश्चर्यचकित प्रगतिही या कालात होते.

सामान्यापणे मनुष्याच्या जीवनात साडेसाती तीन वेला एते– पहिल्यांदा बालपणि, दूस्रयांदा तरुणपणि व तीस्रयांदा म्हातारपणि. पहिलया साडेसाती चा प्रभाव शिक्षण व आई–वडिलावर पडतो. दुस्रया साडेसाती चा प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति व कुटुंबावर पड़तो. तिसरया साडेसाती चा प्रभाव शारिरीक आरोग्यावर पडतो.

खाली दिलेल्या कोष्टकवरुन साडेसाती चा काल व प्रत्येक अडीचकी (ढय्या) चे शुभाशुभ फलासंबंधीची माहिती समजू शकेल.

प्रथम चक्रः

साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	07/07/1990-15/12/1990	----------	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	15/12/1990-05/03/1993	15/10/1993-10/11/1993	----------
चतुर्थस्थान चरण	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
अष्टमस्थान चरण	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
साढ़ेसातीचा पहला चरण	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------

द्वितीय चक्रः

साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	----------
चतुर्थस्थान चरण	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
अष्टमस्थान चरण	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------
साढ़ेसातीचा पहला चरण	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------

तृतीय चक्रः

साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	----------
चतुर्थस्थान चरण	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
अष्टमस्थान चरण	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढ़ेसातीचा पहला चरण	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076

शनि चा ढैया फल

ढैया चा प्रकार	फल	क्षेत्र
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	अशुभ	दुर्घटणा पासून सुरक्षा
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	शुभ	भाग्योदय
चतुर्थस्थान चरण	शुभ	धनार्जन
अष्टमस्थान चरण	सम	पराक्रम हानि
साढ़ेसातीचा पहला चरण	सम	दाम्पत्य कलह

साढेसाती वर उपाय

शनि च्या साडेसाती दरम्यान होणार्या अशुभ प्रभावांची तीव्रता कमी होना साठी दान, पूजन व्रत, मंत्रोच्चार आदि उपाय आहेत. शनिवारी काली काम्बल, काली उड़द, काले–तिल, कालयारंगाची चर्मची चप्पल, काले कापड़, लोखंडाचे दान करावे. शनिदेवाची पूजा, दर्शन व शनिवार चा उपवास करावा उपावास च्या दिवशी फले उड़द चा खाध वस्तु, हरभरे, बेसन, काले तिल, काले मीठ या वस्तुंचेच सेवन करावे पाईजे. स्वतः किवां योग्य गुरुजीकड्न खालील शनिमंत्रचा 19000 जप करुन ध्यावा.

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि चा साडेसातीत शारीरिक, मानसिक व कौटुंबिक शान्ति आणि समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता व अंगीकृत कार्यात प्रगति होण्या साठी खालील महामृत्युंजय मंत्रचा 125000 जप स्वतः करावा किंवा योग्य पूरोहिताकड्न करवून ध्यावा.

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

किवां खालील मंत्रचा कमीत कमी 108 वेला जप करावौं.

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

साढ़ेसाती च अशुभत्व कमी करुन् शुभत्व वाढवण्या साठी 5–1/4 रत्ती वजना च नीलम रत्न पंचधातु उजव्या हाताचा मध्ल्या बोटात धारण करावे. घोडायाच्या नालेची किंवा बोटीच्या कीलची अंगठी मधल्या बोटात वापरवी.

अंगठी किंवा पेन्डन्ट शुक्ल पक्षा चा शनिवारी सायंकाली सूयदृस्ता चा अर्धातास पूवदृ धारण करावी. पुष्य, अनुराधा किंवा उतरा भाद्रपदा या नक्षत्र पैकी जे नक्षत्र शनिवारी असेल त्या दिवशी अंगठी धारण करावी. अंगठी धारण करण्या पूवदृ शुद्ध निरसे दूध व गंगाजलानें अंगठीस अभिषेक करावा. धूप–दीप लावून पूजा करावी व खालील मंत्र 108 वेला जपून अंगुठी धारण करावी.

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगठी धारण केल्या नंतर शनि च्या वस्तूंचे दान करावे या मुले शनिचा अशुभ परिणामांची तीव्रता कमी होईल व आपल्या सुख–शान्ति–समृद्धि ची वाढ़ होईल.

मांगलिक विचार

जेह्वा वर किंवा कन्या ची कुंडलीत मंगळ, लग्न चतुर्थ, सप्तम, तसेच द्वादश भाव असेल तेह्वा असे जातक मंगळ दोषी होतात.।। यथोक्तम।। लग्ने व्यये च पातले जामित्रे चाष्टमे कुजे. स्त्री भर्तुविनाशाय भर्तुः पत्नी विनाशयेत्. मांगळिक दोष लग्न पासून जास्ती प्रबल होतात, पण चंद्रमा पासून यांचा दोष कम आहे. जर शस्त्रनुसार वर अणि कन्या चा मांगळिक दोष भंग होतात तर यांचे दम्पती जीवन सुखी अणि प्रसन्नता युद्ध होणार. यांचे विपरीत बगैर दोष भंग झाले, मांगळिक वर कन्या ला जीवनां चे अनेक अनावश्यक त्रास तसेच अडचणांचे सामना होणार. अतः विवाहा पूर्वी शुद्ध कुंडली मिलान करून हा दोष उचित निवारण करून दांपत्य जीवन शुरू कराय ला पहिजे. ज्यापासून जीवनात शान्ती तसेच संपन्नता होणारी.

****

तुमचे जन्म समय मधे मंगळ ची स्थिति द्वादश भावात आहे अतः आपण एक मांगळिक पुरुष आहे, पण शास्त्रनुसार तुमचा मांगळिक दोष भंग होत आहे हा मंगळ तुम्हाळा शुभ फळ देणार या मुळे शरीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहणार तसेच स्वभाव कडून खर्चे जास्ती होणारे. अशुभ कार्या पेक्षा शुभ कार्य वर जास्ती खर्चे होणार तसेच जीवन मधे सर्व सांसारिक भोग्य पदार्थ प्रसन्नता पूर्वक उपभोग कराय साठी समर्थ होणारे तुमची बायको चा स्वास्थ्य पण चांगळा रहणार तसेच दांपत्य जीवन सुखी होणार. यद्यपि मंगळ तुमचा साठी शुभ फळ देणार पण यांचा प्रभाव पासून विवाह काही उशीर होणार, पण विवाह कार्य अत्यंत शांति आणि सुखी होणार. आणि अनावश्यक त्रास नाय होणार विवाह नंतर पण तुमचा जीवन सुखी आणि शांति रहणार, जीवनात सर्व सुख साधन संपन्न होइळ तसेच शत्रु पण कमजोर होणारे आणि काही त्रास नाय होणार. तुमची जन्म कुंडळी मधे मंगळ द्वादश भावात स्थित आहे अतः मंगळ प्रभाव पासून शुभ कार्यात खर्चे जास्ती होणारे, सर्व भोग्य पदार्थ अर्जित आणि उपभोग करणारे तृतीय भावात दृष्टि होण्या मुळे परक्रमा चा नित्य वृद्धि होणारी तसेच निर्भय होउन आपले सर्व कार्य संपन्न करणारे आणि लोकांना प्रभावित करणारे भाऊ–ताई युद्ध रहणारे आणि सुख होणार. षष्ट भावात दृष्टि होण्या मुळे शत्रु पक्ष नेहमी निर्बळ (कमजोर) रहणारे आणि विरोध कराय साठी असमर्थ रहणारे सप्तम भावात मंगळ दृष्टि जीवन साथी साठी शुभ होणारी या साठी बायको चा स्वास्थ्य बरा होणार पण स्वभावात कधीं–मधीं उष्णता होणारी पण दुष्प्रभाव नाय होणार. तुमचे परस्पर संबन्ध चांगला आणि मधुर रहणारे, अतः दांपत्य जीवन फार आनंद युद्ध होणार अनावश्यक त्रास त्रास कधी नाय होणार. तुमचे दांपत्य जीवन जास्ती सुखी ठेवाय साठी तुम्हाळा असी मांगळिक कन्या वरोवर विवाह करायळा पाहिजे ज्यांचा मंगळ दोष भंग होउन जातात ह्या प्रकारी जर आपण दांपत्य जीवन शुरू करणारे तर जीवनात सर्व सुख सौभाग्य धन ऐश्वर्य सम्मान प्रतिष्ठा, पूर्ण प्राप्त होणारी. कुंडली मिलान समयावर जर कन्या ची कुंडळीत द्वादश मंगळ आहे तर होउ सकतात तर असी कन्या बरोबर विवाह नका करावे जास्ती आवश्यक असेल तर क सकतो पण असा भावात मंगळ कधीं–मधीं अनावश्यक त्रास उत्पन्न करतात ज्या मुळे दांपत्य जीवन प्रभावित होणार. इतर भावात मंगळ होण्या मुळे दोष समाप्त होउन जातात आणि जीवन सुख आणि शांति युद्ध व्यतीत होणार. अतः आखेर निर्णय खूप समझून कराय ला

पाहिजे ज्या मुळे दांपत्य जीवनात काही अडचणे किंवा त्रास नाय होणारी.

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में बुध के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

द्वितीय भाव में सूर्य हो तो जातक भाग्यवान्, सम्पत्तिवान्, मुखरोगी, झगड़ालू, नेत्रकर्णदन्तरोगी, राजभीरु, घरेलू जीवन दुःखी एवं स्त्री के लिए कुटुम्बियों से झगड़ने वाला होता है।

मिथुन राशि में रवि हो तो जातक धनवान्, ज्योतिषी, इतिहास प्रेमी उदार, विवेकी, विद्वान्, बुद्धिमान, मधुरभाषी, नम्र एवं प्रेमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वितीय भाव में है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा अल्प मात्रा में शारीरिक दुर्बलता की अनुभूति होती रहेगी। आपके प्रति उनका प्रेम भाव रहेगा तथा विद्यार्जन एवं धनार्जन संबंधी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही वे समय समय पर आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप भी उनका हार्दिक सम्मान तथा आदर करेंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी सेवा करने के लिए भी तत्पर रहेंगे। उनकी आज्ञा का पालन करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेद होने से विवाद आदि की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय पश्चात सब कुछ ही ठीक हो जाएगा।

चन्द्र

आठवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कामी, व्यापार से लाभवाला, विकास्त प्रमेहमरोगी, वाचाल, स्वाभिमानी, बन्धन से दुखी होने वाला एवं ईर्ष्यालु होता है।

धनु राशि में चन्द्रमा हो तो जातक वक्त, सुन्दर, शिल्पज्ञ, शत्रुविनाशक उच्च बौद्धिक स्तर वाला, सुखी विवाहित जीवन, विरासत में धन सम्पत्ति पाने वाला, साहित्य के प्रति रुचि का दिखावा करने वाला एवं लेखक होता है।

आपके जन्मकाल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में सामान्य प्रेम विद्यमान रहेगा एवं जीवन में समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा प्रोत्साहन प्रदान करती रहेंगी। आपके स्वास्थ्य के प्रति वे चिन्तनशील रहेगी एवं सर्वदा आर्थिक तथा अन्य सहायता करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे आप कभी कभी विशेष धनार्जन करने में भी सफल हो सकेंगे।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा का पालन करने के लिए प्रायः तत्पर ही रहेंगे। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण इनमें कटुता भी आयेगी लेकिन कुछ समयोपरान्त स्वतः सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंध भी सामान्य ही रहेंगे।

मंगल

बारहवें भाव में मंगल हो तो जातक नेत्ररोगी, स्त्रीनाशक, ऋणी, झगड़ालू, मूर्ख, व्ययशील एवं नीच प्रकृति का पापी होता है।

मेष राशि में मंगल हो तो जातक सत्यवक्ता, तेजस्वी, शूरवीर, नेता, साहसी, धनवान्, लोकमान्य, दानी एवं राजमान्य होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप सामान्य स्नेह तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। उनका स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से अस्वस्थता भी उनमें विद्यमान रहेगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगे तथा जीवन में आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी आपको उन्से पूर्ण सहानुभूति तथा सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति सम्मान एवं स्नेह की भावना रहेगी एवं यथाशक्ति जीवन में उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

बुध

द्वितीयभाव में बुध हो तो जातक सुखी, सुन्दर, वक्ता, साहसी, सत्कार्यकारक, संही, दलाल या वकील का पेशा करने वाला, मिष्टाभभोजी, गुणी एवं मितव्ययी होता है।

मिथुन राशि में बुध हो तो जातक मधुरभाषी, शास्त्रज्ञ, लब्धप्रतिष्ठ, वक्ता, लेखक, अल्पसन्ततिवाला, विवेकी, सदाचारी, खोज के काम में चतुर, दीर्घायु, यात्रा का शौकीन, संगीत में रुचि एवं हास परिहास करने वाला होता है।

गुरु

द्वितीयभाव में गुरु हो तो जातक मधुरभाषी, सम्पत्ति और सन्ततिवान्, सुन्दरशरीर, सदाचारी, पुण्यात्मा, सुकार्यरत, लोकमान्य, राज्यमान्य, व्यवसायी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं भाग्यवान् होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।

शुक्र

लग्न (प्रथम) में शुक्र हो तो जातक सुन्दरदेही, दीर्घायु, राजप्रिय, कामी, उच्चसरकारी पद पर आसीन, विलासी, भोगी, विद्वान्, प्रवासी, मधुरभाषी, प्रसिद्ध सुखी एवं ऐश्वर्यवान् होता है।

वृष राशि में शुक्र हो तो जातक सुन्दर, ऐश्वर्यवान्, दानी, सदाचारी, सात्त्विक, परोपकारी, अनेक शास्त्रज्ञ, दृढ़, स्वतन्त्रकामुक, शौकीन तबीयत, संगीत-नृत्य तथा अन्य कलाओं में रुचि एवं आलसी होता है।

शनि

अष्टम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान् स्थूलशरीर, उदार प्रकृति, कपटी, गुप्तरोगी, वाचाल, डरपोक, कुष्ठरोगी एवं धूर्त होता है।

धनु राशि में शनि हो तो जातक व्यवहारज्ञ, पुत्र की कीर्ति से प्रसिद्ध सदाचारी, वृद्धावस्था में सुखी, सक्रिय, चतुर शान्तिप्रिय, दुःखी विवाहित जीवन एवं धनी होता है।

राहु

नवम भाव में राहु हो तो जातक प्रवासी, वातरोगी, व्यर्थ परिश्रमी, दुष्टबुद्धि, भाग्योदय से रहित, तीर्थाटनशील एवं धर्मात्मा होता है।

मकर राशि में राहु हो तो जातक मितव्ययी, कुटुम्बहीन एव दाँत रोगी होता है।

केतु

तृतीय भाव में केतु हो तो जातक चंचल, वायुजनित रोगों से पीड़ित, भाई बहन विहीन, धनी, व्यर्थवादी एवं भूतप्रेतभक्त होता है।

कर्क राशि में केतु हो तो जातक वातविकारी, भूतप्रेत पीड़ित एवं दुःखी होता है।

शारीरिक सौष्ठ, व्यक्तित्व आणि प्रकृति

आपला जन्म वृषभ लग्नामध्ये झाला असल्याने आपण शारीरिकष्ट्या सुंदर व आकर्षक असाल व इतरेजन आपल्या व्यक्तिमत्वाने प्रभावित होतील. तुम्च्या स्वभावात धैर्य व सहिष्णूता असेल व त्याचबरोबर वाणीमध्ये मिठास असेल. कष्टाने हाती घेतलेले काम पूर्ण करणे हा आपला गुण आहे. या गुणामुळे वरिष्ठांना प्रिय, विद्वान व धनऐश्वर्याने युक्त होऊन आनंदाने आपला काळ घालवाल.

आरोग्य आपले सामान्यपणे चांगले राहील, पण आजारी पडलात तर बरे होण्याला काळ जाईल. कधी कधी आपल्या हट्टी स्वभावाचेही दर्शन घडवाल आणि इतरेजनांपेक्षा आपल्याच विचारांना योग्य समजाल. त्यामुळे इतरेजनांच्या मनामध्ये तुमची छबी प्रभावित होऊ शकते. आराम करणे आपल्याला अतिशय आवडते. आपले वैशिष्ट्य म्हणजे एखादे काम हाती घेतले असेल तर ते पूर्ण होईपर्येत सोडणार नाही, अन्यथा, त्याचा विचार करण्यातच काळ घालवाल, त्यामुळे कधी कधी हानी होण्याचा संभव आहे, त्यामुळे अशी वृत्ती प्रयत्नपूर्वक सोडणे हितकारक ठरेल. शत्रूसुद्ध ा वेळोवेळी तुम्च्यासमोर अडचणी निर्माण करण्याचा प्रयत्न करतील, पण कोणाचीही पर्वा न करता आपण आपल्या मार्गाने जाण्याकडे तुमचा कल राहील.

कला व सौंदर्याचे तुम्ही पारखी आहात व कविता करण्याकडेसुद्धा तुमचा कल असू शकतो. त्याचबरोबर धनसंग्रह करण्याकडे तुमचा कल राहील. सांसारिक व भौतिक सुखसुविधासंबंधी आपल्या मनात तीव्र लालसा असेल व त्या प्राप्त करण्याकडे तुमचा नित्य प्रयत्न व परिश्रम कराल. एक विद्वान म्हणून आपल्या समाजात मान असेल. संधी दिसताच राजनीतिमध्ये रस निर्माण होईल, पण महत्वाचे नेतृत्वपद मिळण्याची शक्यता कमी आहे, पण सक्रिय कार्यकत्र्याच्या रूपात आपले योगदान प्रामाणिकपणे द्याल.

शांती व सहनशीलता या तुम्च्या स्वाभाविक गुणांमुळे लोक प्रभावित होतील आणि तुमचे मित्र बनण्यास उत्सुक असतील. त्याचबरोबर स्वकुटुंब, मित्र व भावंडांच्या भलाईसाठी तुम्ही नेहमी यत्नशील राहाल व परिश्रमपूर्वक भौतिक सुखसुविधा प्राप्त करून आयुष्य सुख व आनंदाने व्यतित करण्याचा प्रयत्न कराल. यथोक्तम–

गुणागुणीः स्याद् द्रविणेन पूर्णो भक्तो गुरूणां हि रण प्रियश्च।
धीरश्च शूरः प्रियवाकः प्रशान्तः स्यात्पुरूषो यस्य वृषे विलग्ने।।
– जातकाभरणम

अर्थ – वृषभ लग्नाचा जातक विद्वान, धनवान, गुरूजनांचा आदर करणारा, धैर्यवान, शूर, प्रियवक्ता आणि शांत हृदयाचा असतो.

धन, कुटुंब, डोळा आणि वाणी

आपल्या जन्मसमयी द्वितीय भावामध्ये शुक्राची मिथुन राशी उदित होत होती. याच्या प्रभावामुळे आपली प्रवृत्ति धनसंग्रह करण्याची असेल आणि वर्तमान व भविष्यासाठी प्रचुर प्रमाणात धनार्जन करून त्याचा संग्रह केल्याने आपली आर्थिक स्थिती संतुलित राहील. त्याचबरोबर संपत्ती किंवा सुवर्णादि धातूंमध्ये गुंतवणूक करून त्यापासून भरपूर लाभ प्राप्त कराल. आपले कौटुंबिक जीवन सुख व शांतीयुक्त असेल आणि कुटुंबाच्या सुखासाठी आपण सदैव प्रयत्नशील राहाल आणि कौटुंबिक सहकार्य आपल्याला सदैव राहील.

सर्व स्वाद आपल्याला आवडतात, पण मिष्ठान्नाप्रति आपली अधिक रूची राहील. हा भाव वाणीचे प्रतिनिधीत्व करत असल्याने आणि त्याचा स्वामी बुध असल्याने आपल्या वाणीमध्ये मृदूता व प्रभाव राहील आणि इतरेजनांना आपल्या वाणीने प्रभावित करण्यास समर्थ असाल. त्याचबरोबर विचार अभिव्यक्ती कौशल्याने कराल पण काळानुसार आपल्या विचारांमध्ये बदलसुद्धा होत जातील. आतिथ्यशीलता आपल्या मनामध्ये सदैव राहील. याव्यतिरिक्त स्त्रीवर्गापासून आपल्याला उचित लाभ वेळोवेळी लाभेल आणि वाहन आणि बहुमूल्य रत्नांची प्राप्तीसुद्धा होईल. धार्मिक व सज्जन लोकांशी मैत्री करण्याकडे आपली प्रवृत्ती राहील.

आई, वाहन, भौतिक ऐश्वर्य, भूमि आणि शिक्षा

आपल्या जन्मसमयी चतुर्थ भावात रविची सिंह राशी उदित आहे, त्यामुळे आपल्या मातोश्री एक आदर्श व महत्वाकांक्षी स्त्री असतील आणि कुटुंबाचे पोषण उत्तम करेल आणि कुटुंबातील कुणाही व्यक्तीला तक्रार करायला जागा ठेवणार नाही. त्या एक यशस्वी सामाजिक कार्यकर्ता असतील आणि समाजामध्ये सर्व लोक त्यांच्यामुळे प्रभावित होतील व त्यांना यथोचित सन्मान देतील. कौटुंबिक सुख शांती व समृद्धिसाठी नित्य प्रयत्न करणाऱ्या असतील आणि आपल्या इच्छांना मुरड घालून कुटुंबाला पूर्ण वाहून घेतील.

आपले घर शहरातील महत्त्वाच्या भागात असावे अशी असेल आणि आपले घरसुद्धा सुंदर व आकर्षक असेल. त्याचबरोबर घर स्वच्छ ठेवून त्यामध्ये आधुनिक साजसजावटीने घर सजवण्याकडे आपला कल राहील. घरामध्ये आधुनिक संसाधने असतील. घरातील वस्तू अव्यवस्थित झाल्या तर संताप न करता स्वतःच त्या ठीकठाक करण्याची आपली प्रवृत्ती असेल. कालानुरूप आपल्याला वाहनसुख प्राप्त होईल आणि जीवनस्तर जसा बदलेल तसे वाहनसुद्धा बदलेल. प्रशासकीय सेवेमध्ये आपल्याला वाहनसुख प्राप्त होईल. पैतृक संपत्तीसुद्धा आपल्याला मिळे आणि शिक्षणसुद्धा चांगले होईल. आपल्या स्वभावात तेजी असेल आणि कन्या संतती अधिक असेल.

बुद्धि, सन्तान आणि लग्न सम्बन्ध

आपल्या जन्मसमयी पंचम भावात बुधाची कन्या राशी उदित होती. त्याचा प्रभावामुळे आपण एक बुद्धिमान व्यक्ती असाल आणि वैदिक साहित्याचे ज्ञान प्राप्त कराल. आपण संसारात महत्वाच्या अशी शुभ कार्ये विनाविलंब पूर्ण करण्याचा प्रयत्न कराल. बुधाच्या राशीच्या प्रभावामुळे आपण विज्ञान, गणित, लेखन किंवा अध्ययनामध्ये विशेष रूची दाखवाल त्याचबरोबर पाककौशल्यामध्ये सुद्धा रूची राहील. सुखी दाम्पत्य जीवनासाठी आपल्या जीवनसाथीची निवड करताना आपल्या बुद्धिमत्तेची चुणूक दाखवाल. त्याचबरोबर वार्तालाप करण्यामध्ये आपण चतुर असाल आणि इतरेजनांना आपल्या गप्पांनी प्रसन्न कराल.

आपल्याला संतती सीमित असेल आणि त्यांच्या शिक्षण व आरोग्याविषयी आपण सजग असाल आणि आवश्यक असेल तेव्हा पैसाही खर्च कराल. संतती तुमच्या वृद्धावस्थेमध्ये आपली पूर्ण काळजी घेईल त्यांच्याकडून आपल्याला काही कष्ट होणार नाहीत. आज आपल्याला जे काही मिळत आहे ते पूर्वपुण्याईने मिळते यावर आपली पूर्ण श्रद्धा असेल. त्यामुळे प्रसन्न व संतुष्ट वृत्ती असेल. आपल्याला कन्या संतती अधिक व पुत्र संतती कमी असेल आणि तेसुद्धा आयुष्यामध्ये सुख व वैभवपूर्ण जीवन जगतील.

दम्पति, विवाह आणि साझेदार

आपल्या जन्मसमयी सप्तम भावामध्ये मंगळाची वृश्चिक राशी उदित होती, त्याच्या प्रभावामुळे आपले दाम्पत्य जीवन मधुर व शांतीपूर्ण राहील तसेच आयुष्य सुख व उन्नतीदायक जाईल. या राशीच्या प्रभावामुळे आपल्याला जीवनसाथी प्रेमळ व शांत स्वभावाच्या मिळेल.

तुमच्या जीवनसाथीला तुमच्या प्रेमसंबंधांविषयी शंका असेल, पण अशा गोष्टी आपण गुप्त ठेवणार नाही आणि तसे काही झाले तर तुम्ही तुमच्या पत्नीला स्पष्टपणे सांगाल. तुमचा कल सुखद व शांत कौटुंबिक जीवन व्यतित करण्याकडे असेल. तुम्ही घराकडे कधीही दुर्लक्ष करणार नाही आणि पत्नीच्या गरजांकडेही पूर्ण लक्ष द्याल, ज्यामुळे आपापसात प्रेम व सद्भाव कायम राहील. तुम्हाला आपली पत्नी चांगले कपडे नेसावी आणि प्रसन्न मुद्रेमध्ये असावे असे वाटत असते. कन्या, मकर, कर्क, वृश्चिक व मीन राशी किंवा लग्नाच्या जातकाबरोबर विवाह केल्यास आपले जीवन सुखकर जाईल. भौतिक साधने, वित्तसंबंधी कार्य, कृषि, संगीत, महिलांची वस्त्रप्रावरणे याकडे आपला जास्त रस आहे, आणि अशा व्यवसायामधून आपल्याला उचित लाभ होऊ शकतो. त्याचबरोबर ज्योतिष, तंत्र मंत्र आदि व्यवसायसुद्धा आपण स्वीकारू शकता.

आपली पत्नी निरोगी, सुडौल शरीराची असेल आणि अनेकानेक कला तिला येत असतील आणि सौभाग्यपूर्ण आपले जीवन व्यतित करेल.

पिता, व्यवसाय आणि सामाजिक स्थिति

आपल्या जन्मसमयी दशम भावामध्ये शनिची कुंभ राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपण एखाद्या विख्यात कंपनी किंवा उद्योगामध्ये कार्यरत राहाल. खाणी, कंत्राटदारी किंवा खनिज आयातीमध्ये आपल्याला रूची राहील. याव्यतिरिक्त घरबांधणी, मेकॅनिकल इंजिनिअरिंग, तंत्र व स्टीलसंबंधी व्यापार किंवा कार्यक्षेत्राशी आपला संबंध असेल. त्याचबरोबर आपल्याला गुप्तचर विभागाशी संबंधित काम मिळू शकते. तुम्हाला आधुनिक भौतिक साधनांच्या व्यापारामध्ये रूची राहील आणि त्यातून भरपूर लाभही होईल. गुंतवणुकीतूनही आपल्याला लाभ होऊ शकतो किंवा वित्त उद्योगाशी आपला संबंध राहील. स्वकष्टाने पैसा कमवाल आणि जुगार किंवा सट्टा इत्यादिंमध्ये आपल्याला रस राहील आणि कधी कधी आपल्याला लाभसुद्धा होऊ शकतो, विशेषतः बुधाच्या दशेमध्ये याची प्रचिती येईल.

आपले वडील एक बुद्धिमान व्यक्ती असतील आणि त्यांची स्मरणशक्ती उत्तम असेल. त्यांचा अचूक तर्कांनी लोक प्रभावीत असतील आणि त्यांना सन्मान देतील, त्याचबरोबर ते स्पष्टवक्ते आणि निःस्वार्थी प्रवृत्तीचे असतील. नैतिक कार्य कोणतेही असले तरी ते करण्यास तत्पर असतील.

राजकारणाचा आधार शनि ग्रह असल्याने त्याच्या दशा–अंतर्दशेमध्ये आपण राजकारणामध्ये प्रवेश करू शकता त्याचबरोबर या काळात राजकारण किंवा सरकारकडून अपेक्षित मदत व लाभही प्राप्त होईल. याचबरोबर तुम्ही कार्यमग्न, चतुर, धर्मावर श्रद्धा ठेवणारे असाल पण त्याचबरोबर शत्रूही अधिक असतील.

फलादेश - 2025

यंदा गुरु गोचरीने सप्तम भावात असेळ. म्हणून हे वर्ष तुमच्यसाठी चांगळे असेळ. व्यापार किंवा नोकरीत वर्ष तुमच्यासाठी चांगळे असेळ. व्यापार किंवा नोकरीत उन्नती होईळ किंवा अचानक ळाभ संभवतो. त्याचबरोबर बेरोजगारांना काम मिळण्याची शक्यता आहे. यंदा अविवाहितांचे विवाह होण्याचा योग आहे. कौटुम्बिक सुखासाठी हे वर्ष चांगळे असेळ. पत्नीकडून सहकार्य मिळेळ. परस्पर संबंध उत्तम रहातीळ. ह्या काळात समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ व सन्मान मिळवाळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असेळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. त्याचबरोबर खर्च पण वाढेळ. अन्य गोचरफळे व दशाफळे पण चांगळी असल्यानी हे वर्ष चांगळे व भाग्यकारक आहे.

यंदा शनी चतुर्थ भावात असेळ. त्याचा प्रभाव सामान्यतः चांगळा असेळ. नोकरी व व्यापारात उन्नतीची शकयता आहे. राजकारणात संतुष्टी मिळेळ. भावंडे व कुटुंबातीळ ळोकांचे सहकार्य मिळेळ. आईची प्रकृती चांगळी असेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे जाईळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. यंदा एरवादे नवीन कार्य किंवा घर वा इस्टेटीसंबंधी कार्य सुरु करण्याची शक्यता आहे. सुखातीळा अडथळे आळे तरी भविष्यात ळाभ होईळ.त्याचबरोबर यंदा अन्य गोचर व दशाफळ अनुकूळ असेळ त्यामुळे सफळता मिळेळ. पण शनीच्या प्रभावाने मानसिक तणाव निर्माण होऊ शकतो. व महत्वाच्या कार्यात विलम्ब संभवतो. म्हणून हा प्रभाव कमी करण्यासाठी नियमिपणे शनीची पूजा व दान करावे. शनिवारी डाव्या हाताच्या मंवल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे सर्व अडचणी दूर होतीळ व प्रसन्नता मिळेळ.

यंदा राहू गोचरीने तिसन्या भावात व केतू नवत्या भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष चांगळे जाईळ. यंदा मान, प्रतिष्ठा व पराक्रमात वाढ होईळ. सर्व ळोक तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ. त्याचबरोबर शत्रू व प्रतिस्पर्ध्यांचा पराभव होऊन ते समर्पण करतीळ. सर्व मानसिक चिंता संपतीळ. आर्थिक–दृष्टया ह्या काळात उन्नती होईळ. भरपूर प्रमाणात धनप्राप्ती संभवते. कार्यक्षेत्रात ह्या काळात स्वकष्टाने सफळता मिळवाळ. त्याचबरोबर मित्रांकडून सहकार्य मिळेळ. बांधवाविषयी चिंता उत्पन्न होऊ शकते. नवमस्थ केतू मुळे वेळप्रसंगी कार्यसिद्धीसाठी परिश्रम करावे ळागतीळ. पण अन्य गोचर व दशाफळ अनुकूल असल्याने हे वर्ष सौभाग्यकारक असेळ.

चन्द्र ची महादशा मधीं शनि चा अंतर 12/01/2025 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर बुध चा अंतर प्रारंभ होणार। शनि अष्ट्ं भाव मधीं धनु राशि मधी स्थित आहे। पण बुध द्वि तीय भाव मधीं मिथुन राशि मधी स्थित आहात।

हा समय सामान्य अनुकूळ रहणार तसेच जुने कार्य किंवा प्रयोजने सफळ होणारी आणि सफळता प्राप्त करण्या साठी सहयोग भेंटणार. व्यापार क्षेत्रातीळ उन्नति आणि लाभ होणार आणि धनार्जन करणारे कुटुम्ब सुख शान्ती आणि समृद्धि पण चांगली रहणारी तसेच परस्पर मधुर सम्बन्ध रहणार. नोकरी मधे उन्नति होऊ सकतो आणि अधिकारयां बरोबर मधुर सम्बन्ध स्थापित होणार वर्ष मधीं उत्तरार्ध जास्ती चांगली सफळता देणार आणि जुने कार्य सम्पन्न होणार आणि मिळकत वृद्धि होणारी अतः हा समय सदुपयोग करावे.

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि उन्नति युद समय आहे. अतः आर्थिक स्थिति

चांगळी रहणारी तसेच उत्साह युध व्यापार मधे शुभ परिणाम प्राप्त करणारे. नवीन कार्य पण प्रारम्भ होउ सकतो नोकरी मधे अधिकारयां पासून मधुर सम्बन्ध स्थापित होणार कुटुम्ब सुख शान्ती रहणारी भौतिक वस्तु वर खर्चे पण होणार. मोठे अधिकारयां पासून संवन्ध स्थापित होणार प्रवास पासून लाभ आणि सम्मान प्राप्त होणार सामाजिक सम्मान प्राप्त होणार अतः समय सदुपयोग करावे.

फलादेश - 2026

गोचरवश यंदा गुरु अष्टम भावात असेळ. म्हणून हे वर्ष तुमच्यासाठी मध्यम स्वरूपाचे असेळ. शारीरिक व मानसिकदृष्टया सुदृढ़ असळात तरी वेळप्रसंगी चिंता अनुभवाळ. कष्ट व पराक्रमाने सांसारिक कार्यात सफळता मिळवाळ. त्याचबरोबर नोकरी, राजकारण किंवा व्यापारात विरोधकांकडून अडथळे आल्यानी त्रास होईळ. पण परिश्रमपूर्वक त्यावर मात कराळ. यंदा एरवादा खटळा सुरु होऊ शकतो. आर्थिक स्थिती मध्यम स्वरूपाची असेळ. खर्च वादतीळ. ह्या काळात विशिष्ट ळाभ होण्याची संभावना आहे. त्याचबरोबर ज्योतिष, तंत्रमत्रादिवर श्रद्धा वाढेळ व ज्ञानार्जन कराळ.अन्य गोचर फळ शुभ तर दशाफळ मध्यम स्वरूपाचे असेळ. म्हणून परिश्रमपूर्वक सफळता मिळवाळ. तुम्ही नियमितपणे गुरुची पूजा तथा दान करावे.

गोचरीने यंदा शनी चवथ्या भावात आहे. त्याच्या प्रभावाने हा काळ मध्यम स्वरूपाचा असेळ. सांसारिक कार्ये परिभमाने संपन्न कराळ. भावंड व कुटुंबाकडून कमीअधिक प्रमाणात सहकार्य मिळेळ. आईची प्रकृती पण मध्यम असेळ. आर्थिक परिस्थिती सामान्य असेळ व धनप्राप्ती बरोबरच खर्च पण होतीळ. पण आर्थिक परिस्थितीवर त्याचा विशेष परिणाम होणार नाही. व्यापारात किंवा नोकरीत प्रगती होईळ. कर्ज होऊन तुम्ही घर बांधू शकता. जयामुळे सध्या अडचणी येतीळ पण भविष्यात ळाभ होईळ.ह्या काळात अन्य गोचर शुभ असेळ पण दशाफळ विशेष अनुकूळ नसेळ. शनीच्या प्रभावामुळे वेळप्रसंगी महत्वाच्या कामात अडचणी येऊ शकतात. ज्यामुळे मानसिक ताण येईळ. म्हणून अशुभ फळे कमी करण्यासाठी नियमितपणे शनीची पूजा व दान करावे. शनिवारी डाव्या हाताच्या मधल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे अशुभ प्रभाव कमी होऊन शुभता वाढेळ.

गोचरीने यंदा राहू तृतीयात व केतू नवभात असेळ. त्यामुळे ह्या काळात पराक्रमात व प्रतिष्ठेत वाढ होईळ. सर्व ळोक प्रभाव स्वीकारतीळ. शत्रू व प्रतिस्पर्धी पराजित होतीळ. मानसिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे आहे. महत्वाची कार्ये सिद्ध कराळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे जाईळ. इच्छित प्रमाणात धनप्राप्ती संभवते. त्याचबरोबर कार्यक्षेत्रात स्वपराक्रमाने विशिष्ट सफळता मिळवाळ. मित्रांकडून सहकार्य मिळेळ. बंधुवर्गाच्या बाबतीत चिंता निर्माण होऊ शकते. अन्य गोचर अशुभ असेळ पण दशा शुभ असल्याने शुभ फळे वाढतीळ. अशुभ फळे कमी प्रमाणात कधीतरी मिळतीळ.

चन्द्र ची महादशा मधीं बुध चा अंतर 14/06/2026 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर केतु चा अंतर प्रारंभ होणार। बुध द्वितीय भाव मधीं मिथुन राशि मधी स्थित आहे। पण केतु तृतीय भाव मधीं कर्क राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूळ रहणार अतः परिश्रम पासून कार्य सफळ होणार. कुटुम्ब सुख शान्ती चांगली रहणारी आणि परस्पर मधुर संबन्ध रहणार कुटुम्ब मधे विवाह किंवा कोणी जन्म पासून माणूस संख्या वृद्धी होउ सकतो. या वेळी व्यापार मधे पूर्ण लाभ होणार आणि नवीन कार्य शु होणर नोकरी मधे उन्नती होणारी. अधिकारयां पासून मधुर संबन्ध रहणार मित्र पासून सहयोग प्राप्त होणार.

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूळ रहणार अतः असे समय वर धैर्य आणि उत्साह उत्पन्न होणार. कुटुम्ब शान्ती आणि परस्पर मधुर सम्बन्ध, सहयोग रहणार व्यापार, कार्य क्षेत्रातीळ फायदे होणार. नौकरी मधे उन्नति होऊ सकतो आणि मोठे अधिकारयां बरोबर मधुर सम्बन्ध स्थापित होणार. समाजातीळ यश आणि वांछित सफळता भेंटणारी तसेच साहित्य, कळा, वगेरे मधे चि उत्पन्न होणारी. शारीरिक आणि मानसिक स्थिति चांगली रहणारी काही तरी प्रवास होणारी तसेच प्रवास पासून फायदे होणार. नवीन प्रयोजने सफळ होणारी तसेच सांसारिक वस्तु खरेदी साठी खर्चे होणार पण आर्थिक स्थिति अनुकूल रहणारी अतः असा समय सदुपयोग करावे.

फलादेश - 2027

गोचरीने यंदा गुरु नवव्या भावात आहे. त्यामुळे हा काळ तुमच्यासाठी चांगळा असेळ. धर्माविषयी श्रद्धा वाढेळ आणि परोपकाराची कार्ये कराळ. शारीरिक व मानसिकदृष्टया सुदृढ़ असाळ. जुनी ळांबळेळी कार्ये पूर्ण होतीळ. नवीन व्यापारविषयक किंवा दुसऱ्या ळाभदायक योजना बनवाळ. कार्यक्षेत्रात उन्नती संभवते. नोकरी किंवा राजकारणात जबाबदारीचे स्थान मिळेळ. त्याचबरोबर समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ व ख्याती पसरेळ. आर्थिकदृष्टया पण हे वण चांगळे असेळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. व दशाफळ पण अनुकूळ आहे. म्हणून हे वर्ष चांगळे व महत्वाचे असेळ.

यंदा गोचरीने शनी पाचव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने तुमची प्रकृती चांगळी राहीळ व सांसारिक कार्ये उत्साहाने व परिश्रभाने सम्पन्न काराळ. ह्या काळात तुमच्या दृष्टिकोनात बदळ होण्याची शक्यता आहे. ळोकांशी संबंध चांगळे राहतीळ व मान–सन्मान मिळेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे रहातीळ व मान–सन्मान मिळेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असून भरपूर प्रमाणात ळाभ व धनप्राप्ती संभवते. त्याचबरोबर मिळकतीची साधने वाढतीळ. संततीसौख्य चांगळे असेळ व त्यांची उन्नती संभवते. पत्नीची प्रकृती चांगळी असेळ, परस्पर संबंधात मधुरता राहीळ व सहकार्य मिळेळ.यंदा अन्य गोचर व दशाफळ पण शुभ व अनकूळ असेळ. त्यामुळे प्रत्येक क्षेत्रात सफळता मिळेळ. त्याचबरोबर राजकारणी ळोकांशी संपर्क स्थापित होईळ ज्यापासून ळाभ संभवतो. यंदा तुम्हाळा विशेष ळाभ होण्याची शक्यता आहे. म्हणून कार्यसिद्धीस तत्पर असावे व वेळेचा सदुपयोग करावा.

यंदा राहू गोचरीने द्वितीयात व केतू अष्टमात असेळ. त्यामुळे हे वर्ष सामान्य स्वरूपाचे असेळ. ह्या काळात कौटुंबिक सुख–शांती व समृद्धी अनुकूल असेळ. परस्पर सहकार्य राहीळ. तुमची प्रकृती मध्यम स्वरूपाची असेळ. मानसिक उद्विग्नता राहीळ. सांसारिक कार्ये परिश्रमाने साध्य होतीळ. आर्थिक स्थिती सामानय असेळ. आवश्यक प्रमाणात धनप्राप्ती झाळी तरी खर्चही अधिक असेळ. परंतु त्यामुळे त्रास होणार नाही. त्याचबरोबर इस्टेटीसंबंधी ळाभ संभवतो.यंदा अन्य गोचर व दशाफळ शुभ आहे. त्यामुळे कार्यसिद्धी व उन्नती अनुभवाळ. त्यामुळे हे वर्ष सामान्यतः चांगळे असेळ.

चन्द्र ची महादशा मधीं केतु चा अंतर 13/01/2027 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर शुक्र चा अंतर प्रारंभ होणार। केतु तृतीय भाव मधीं कर्क राशि मधी स्थित आहे। पण शुक्र प्रथम भाव मधीं वृषभ राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल रहणार अतः ह्या वेळी कार्य प्रयोजने सफळ होणारी आणि उन्नति प्राप्त करणारे कुटुम्ब शुख शान्ती आणि परस्पर मधुर सम्बन्ध रहणार आणि सहयोग भेंटणार. आर्थिक स्थिति चांगली रहणारी आणि धनार्जन होणार, व्यापार अनुकूल रहणार नौकरी मधे पदोन्नति होणारी. आणि अधिकारंया बरोबर मधुर सम्बन्ध रहणार विशेष माणूस बरोबर सम्बन्ध स्थापित होणार तसेच लाभ आणि सहयोग भेंटणार. मित्र आणि सम्बन्धी पण सहयोग देणारे. प्रवास पासून जास्ती फायदे नाय होणार, काही तरी नवीन पूंजी

निवेश आणि व्यापार सम्बन्धी कार्य शु होणार.

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल रहणार अतः सगड़े कार्य सिद्ध होणार आणि व्यापार मधे फायदे होणार. नौकरी मधे पदोन्नती होऊ सकतो अधिकारयां बरोबर मधुर सम्बन्ध स्थापित होणार. कुटुम्ब सुख शान्ती आणि परस्पर सहयोग रहणार प्रभाव शाली माणूस बरोबर संपर्क स्थापित होणार. तसेच मित्रता पण होणारी अतः समय सदुपयोग करावे.

फलादेश - 2028

गोचरीने यंदा गुरु नवम भावात आहे. म्हणून हे वर्ष भाग्यकारक असेळ. धर्माविषयी श्रद्धा वाढेळ व परोपकाराची कार्ये कराळ. शारीरिक व मानसिकदृष्टया सुदृढ़ असाळ. यंदा चांगळी व महत्वाची ळांबळेळी कार्ये होतीळ व व्यापार किंवा नोकरीत ळाभदायक योजनांची सुखात होईळ. त्याचबरोबर नोकरी किंवा राजकारणात महत्वाचे पद मिळेळ. समाजात मान–सन्मान व प्रतिष्ठा वाढेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असून भरपूर प्रमाणात धनळाभ होईळ. उपर्युक्त चांगल्या फळात वेळप्रसंगी कमतरता जाणवेळ. पण सामान्यतः परिणाम चांगळे असतीळ.

गोचरीने शनी यंदा पाचव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने तुमची प्रकृती मध्यम असेळ. दृष्टिकोनात बदह संभवतो. त्याचबरोबर सांसारिक कार्ये परिश्रम व उत्साहाने सम्पन्न कराळ व त्यात कमीजास्त प्रमाणात सफळता पण मिळेळ. अन्य ळोकांशी संबंध सामान्य असतीळ व मान मिळेळ. आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ व आवश्यक प्रमाणात धनप्राप्ती होईळ. त्याचबरोबर मिळकतीच्या साधनांमध्ये वाद होईळ. संतती सुख मध्यम स्वरूपाचे असेळ. ते आपल्या कार्यक्षेत्रात सफळता मिळवतीळ. त्याचबरोबर कौटुंबिक सुख मध्यम स्वरूपाचे असेळ. पत्नीची प्रकृती प्रभावित होऊ शकते.ह्या काळात अन्य गोचर चांगळे असेळ पण दशा विशेष अनुकूळ नसेळ त्यामुळे महत्वाच्या कामात अडथळे येऊ शकतात. पण कष्टाने त्यावर मात कराळ. ह्या वर्षी राजकीय ळोकांशी संपर्क येऊ शकतो. पण त्यांच्यापासून ळाभ कमीच होईळ. त्यामुळे कष्टपूर्वक कार्य सम्पन्न करण्यास तत्पर असावे.

यंदा राहू गोचरीने लग्नी व केतू सप्तम स्थानात आहे. त्यामुळे हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असेळ. ह्या काळात तुमची प्रकृती विशेष चांगळी रहाणार नाही. त्याचबरोबर मानसिक त्रास संभवतात. पती–पत्नीत मतभेद संभवतात. परंतु त्याचे दुष्परिणाम होणार नाहीत. संबंध सामान्य असतीळ. ह्या काळात आर्थिक स्थिती सामान्य असेळ. पराक्रम व कष्टाने धनप्राप्ती कराळ. पण खर्चही अधिक होतीळ. कार्यक्षेत्रातीळ उन्नती व सफळतेच्या दृष्टीने हे वर्ष संघर्षपूर्ण असेळ. कष्टानंतरच उन्नतीचे मार्ग प्रशस्त होतीळ. ह्या काळात जुने संबंध कमी होऊन नवीन संबंध स्थापित होतीळ ज्यापासून भविष्यात सफळता मिळू शकते.त्याचबरोबर अन्य गोचर अनुकूळ तर दशाफळ मध्यम स्वरूपाचे असेळ. त्यामुळे परिश्रम व संघर्षानंतरच कार्य सिद्ध होतीळ. त्यामुळे अशुभ फळे कमी करण्यासाठी नियमितपणे राहू केतूची पूजा, जप व दान करावे.

ह्या वर्ष मंगळ ची महादशा शुरु होत आहे। अतः ह्या समय तुमची जीवन शारणी तसेच कार्य क्षेत्र मधीं परिवर्तन होणार। ह्या वर्ष चा प्रारंभ चन्द्र ची महादशा मधीं शुक्र चा आखेर अंतर पासून होत आहे। आणि वर्ष ची समाप्ति मंगळ ची महादशा मधीं मंगळ चा पहिला अंतर पासून होणारी। तुमची जन्मकुंडली मधीं महादशा चा स्वामी द्वादश भाव मधीं मेष राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल नाय रहणार अतः चांगुल परिणाम नाय भेंटणार. असे समय वर व्यापार मधे विशेष उन्नति नाय होणारी नौकरी मधे उन्नति साठी उशीर

होउ सकतो आणि अधिकारयां बरोबर मधुर संवन्ध नाय रहणार. कुटुम्ब सुख शान्ती आणि समृद्धी मधे मतभेद उत्पन्न होणार. घरगुती समान खरेदी साठी आर्थिक स्थिति चांगली नाय रहणारी. कधीं–मधीं आर्थिक त्रास पण उत्पन्न होणारी. पण अडचणे आणि परिस्थित चा सामना कराय साठी समर्थ होणारे. अतः धैर्य बरोबर कार्य सम्पन्न करावे.

हा समय तुमचा साठी शुभ नाय आहे अतः आकांक्षा पूर्ति साठी काही तरी अडचणे उत्पन्न अवश्य होणारी. व्यापार मधे घाटे होउ सकतो नोकरी मधे पदोन्नति साठी उशीर होणार. आर्थिक स्थिति मध्यम रहणारी तसेच अधिकारी पासून मतभेद रहणार कुटुम्ब सुख शान्ती मधे कमी रहणारी तसेच परस्पर मतभेद रहणार. शत्रु त्रास उत्पन्न करणारे अतः शत्रु पासून सावध रहाय ला पाहिजे फाळतू प्रवास पण होणारी अत': धैर्य बरोबर समय व्यतीत करावे.

फलादेश - 2029

गोचरीने यंदा गुरु दशम स्थानात असेळ. म्हणून हे वर्ष महत्वाचे राहीळ. व्यापार किंवा नोकरीत ह्या काळात उन्नती संभवते. त्याचबरोबर उच्चाधिकारी व राजकारणी ळोकांशी चांगळे संबंध बनतीळ. फळतः त्यापासून ळाभ संभवतो. यंदा राज्यस्तरावर एरवादा सन्मान मिळेळ. कौटुम्बिक सुख–समृद्धीकरता हे वर्ष चांगळे असेळ. सर्व जण प्रेमाने रहातीळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असेळ व धनप्राप्ती संभवते. ह्या काळात विभांती मिळणार नाही. सांसारिक जबाबदान्या पार पाडाळ. ह्या काळात शाळीन व्यवहार ठेवावा. अन्य गोचरफळ अशुभ पण दशा शुभ फळे देईळ. म्हणून सामान्यतः हे वर्ष चांगळे असेळ.

गोचरीने शनी यंदा पाचव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने तुमची प्रकृती मध्यम असेळ. दृष्टिकोनात बदह संभवतो. त्याचबरोबर सांसारिक कार्ये परिश्रम व उत्साहाने सम्पन्न कराळ व त्यात कमीजास्त प्रमाणात सफळता पण मिळेळ. अन्य ळोकांशी संबंध सामान्य असतीळ व मान मिळेळ. आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ व आवश्यक प्रमाणात धनप्राप्ती होईळ. त्याचबरोबर मिळकतीच्या साधनांमध्ये वाद होईळ. संतती सुख मध्यम स्वरूपाचे असेळ. ते आपल्या कार्यक्षेत्रात सफळता मिळवतीळ. त्याचबरोबर कौटुंबिक सुख मध्यम स्वरूपाचे असेळ. पत्नीची प्रकृती प्रभावित होऊ शकते.ह्या काळात अन्य गोचर चांगळे असेळ पण दशा विशेष अनुकूळ नसेळ त्यामुळे महत्वाच्या कामात अडथळे येऊ शकतात. पण कष्टाने त्यावर मात कराळ. ह्या वर्षी राजकीय ळोकांशी संपर्क येऊ शकतो. पण त्यांच्यापासून ळाभ कमीच होईळ. त्यामुळे कष्टपूर्वक कार्य सम्पन्न करण्यास तत्पर असावे.

यंदा राहू गोचरीने लग्नी व केतू सप्तम स्थानात आहे. त्यामुळे हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असेळ. ह्या काळात तुमची प्रकृती विशेष चांगळी रहाणार नाही. त्याचबरोबर मानसिक त्रास संभवतात. पती–पत्नीत मतभेद संभवतात. परंतु त्याचे दुष्परिणाम होणार नाहीत. संबंध सामान्य असतीळ. ह्या काळात आर्थिक स्थिती सामान्य असेळ. पराक्रम व कष्टाने धनप्राप्ती कराळ. पण खर्चही अधिक होतीळ. कार्यक्षेत्रातीळ उन्नती व सफळतेच्या दृष्टीने हे वर्ष संघर्षपूर्ण असेळ. कष्टानंतरच उन्नतीचे मार्ग प्रशस्त होतीळ. ह्या काळात जुने संबंध कमी होऊन नवीन संबंध स्थापित होतीळ ज्यापासून भविष्यात सफळता मिळू शकते.त्याचबरोबर अन्य गोचर अनुकूळ तर दशाफळ मध्यम स्वरूपाचे असेळ. त्यामुळे परिश्रम व संघर्षानंतरच कार्य सिद्ध होतीळ. त्यामुळे अशुभ फळे कमी करण्यासाठी नियमितपणे राहू केतूची पूजा, जप व दान करावे.

मंगळ ची महादशा मधीं मंगळ चा अंतर 10/08/2029 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर राहु चा अंतर प्रारंभ होणार। मंगळ द्वादश भाव मधीं मेष राशि मधी स्थित आहे। पण राहु नवम् भाव मधीं मकर राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी शुभ नाय आहे अतः आकांक्षा पूर्ति साठी काही तरी अडचणे उत्पन्न अवश्य होणारी. व्यापार मधे घाटे होउ सकतो नोकरी मधे पदोन्नति साठी उशीर होणार. आर्थिक स्थिति मध्यम रहणारी तसेच अधिकारी पासून मतभेद रहणार कुटुम्ब सुख शान्ती मधे कमी रहणारी तसेच परस्पर मतभेद रहणार. शत्रु त्रास उत्पन्न करणारे अतः शत्रु पासून सावध

रहाय ला पाहिजे फाळतू प्रवास पण होणारी अत': धैर्य बरोबर समय व्यतीत करावे.

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूल नाय रहणार अतः ह्या वेळी अधूरे कार्य पूर्ण नाय होणार तसेच इच्छित परिणाम नाय भेंटणार. आर्थिक स्थिति चांगली नाय रहणारी तसेच मिळकत कमी होणारी, कधीं–मधीं आर्थिक त्रास पण होणार असा समय व्यापार साठी अनुकूल नाय रहणार. कुटुम्ब सुख शान्ती आणि समृद्धी तसेच सहयोग नाय भेंटणार, मित्र बरोबर वांछित लाभ नाय भेंटणार. असे समय वर नवीन कार्य साझेदारांचा कार्य पासून सावध रहाय ला पाहिजे. नौकरी मधे पदोन्नति साठी उशीर होऊ सकतो आणि अधिकारयां बरोबर मतभेद उत्पन्न होणार. अतः धैर्य बरोवर समय व्यतीत करावे.

दशा विश्लेषण

महादशा :– चन्द्र
(15/03/2019 - 14/03/2029)

चन्द्र महादशा की अवधि दस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 15/03/2019 को आरम्भ और 14/03/2029 को समाप्त होगी।

चन्द्र अष्टम भाव में अवस्थित है और अष्टम भाव लम्बी आयु या आयु-विस्तार, विरासत, इच्छाओं, बीमा, पेंशन, डूबने से मृत्यु, दुर्भाग्य, दुःख, अपमान, विषाद, असंतोष बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधित्व करता है। अतः दस वर्षों की यह अवधि आश्चर्य और उथल-पुथल की घटनाओं से भरी होगी और आपके जीवन में अनेक आश्चर्यजनक घटनाएं घटेंगी।

स्वास्थ्य :

अष्टम महादशा का स्वामी चन्द्र अष्टम भाव में अवस्थित है। अष्टम भाव लंबी आयु का प्रतिनिधित्व करता है। फलस्वरूप आपकी आयु लम्बी होगी और आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। वैसे किसी बड़ी स्वास्थ्य समस्या अथवा दुर्घटना की संभावना नहीं है किन्तु इस अवधि में आपकी कुछ झड़पें हो सकती हैं।

अर्थ तथा संपत्ति :

अर्थ की दृष्टि से यह दशा उत्तम है और आपको भूमि, वाहन, शक्ति या पूर्व में अर्जित शिक्षा के कारण पद की प्राप्ति हो सकती है। कुछ नुकसान भी हो सकता है। फिर भी आपको कुछ पैतृक सम्पत्तियों की प्राप्ति होगी।

व्यवसाय :

एक व्यवसायी के रूप में आप संतुष्ट रहेंगे। यदि सेवारत हों तो आपकी पदोन्नति हो सकती है, यद्यपि आप कुछ मानसिक कष्ट और मनोवैज्ञानिक कुण्ठाओं के शिकार हो सकते हैं। आपका हृदय विशाल होगा और यदि व्यवसाय से जुड़े हैं तो कुछ उतार-चढ़ाव की संभावनाएं हैं जिनके फलस्वरूप आप का भाग्य उत्तम होगा और आप उन्नति करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन उत्तम होगा। आपके जीवनसाथी आपके सहायक व सहयोगी होंगे और पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। आपके बच्चे आपके आज्ञाकारी होंगे और सम्भव है कि आपके माता-पिता आपके जीवन निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं जिससे आपका जीवन सुखमय व सौहार्द्रपूर्ण हो।

अंर्तदशा :- चन्द्र - शनि
(14/06/2023 - 12/01/2025)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 15/03/2019 को प्रारंभ हुई और 14/03/2029 को समाप्त होगी। शनि अंतर्दशा 14/06/2023 को प्रारंभ होकर 12/01/2025 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्रिका के अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्धटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। शनि आयुष्कारक है। इसके अष्टम भाव में स्थित होने से आपकी आयु लंबी रहेगी। अष्टम भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 10, 2, 5 भावों पर दृष्टि द्वारा अपना प्रभाव डाल रहा है।

इस अवधि में आप उत्तरदायित्वों का निर्वाह धैर्य और परिश्रम द्वारा सभी बाधाओं को पार करने के बाद करेंगे। नेत्र और श्वसन तंत्र के रोगों से बचाव करें। ईमानदारी और दयाभाव बनाए रखें।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए चांदी की अंगूठी में नौमुखी रुद्राख को शनिवार के दिन शिवजी की पूजा करने के बाद शनि के वैदिक मंत्र का जाप करते हुए धारण करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - बुध
(12/01/2025 - 14/06/2026)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 1 वर्ष 5 मास रहेगी।

आपके लिए चंद्र महादशा 15/03/2019 को प्रारंभ हुई थी और 14/03/2029 को समाप्त होगी। इसमें बुध की अंतर्दशा 12/01/2025 को प्रारंभ होकर 14/06/2026 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्रिका के द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत, परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है। बुध दूसरे भाव में स्थित होकर आठवें भाव पर दृष्टिपात कर रहा है। इस अंतर्दशा की अवधि में आप खूब धन कमाएंगे। बुद्धिमत्ता में वृद्धि होगी। दान-धर्म में धन खर्च करेंगे पर धन की बचत में भी माहिर होंगे।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करना श्रेयस्कर रहेगा।

अंर्तदशा :- चन्द्र - केतु
(14/06/2026 - 13/01/2027)

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इसके अंतर्गत केतु अंतर्दशा 7 मास की रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 15/03/2019 को प्रारंभ हुई ओर 14/03/2029 को समाप्त

होगी। केतु अंतर्दशा 14/06/2026 को प्रारंभ होकर 13/01/2027 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका के तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है। तृतीय भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के नवम भाव पर दृष्टि डाल रहा है।

इस अवधि में आप बली और साहसी होंगे। शत्रुओं का दमन होगा। आपकी कला और संगीत में रुचि होगी। मस्तिष्क कभी-कभी विचलित हो सकता है। समय लगभग मध्यम रहेगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए शनिवार और मंगलवार को व्रत करें। व्रत के बाद हनुमानजी की उपासना करें और मीठा भोजन लें, नमक न लें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - शुक्र
(13/01/2027 - 13/09/2028)

चंद्र की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 15/03/2019 को प्रारंभ होकर 14/03/2029को समाप्त होगी।

इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 13/01/2027 को प्रारंभ होकर 13/09/2028 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्रिका के प्रथम भाव में स्थित है। प्रथम भाव शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है। लग्न में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के सप्तम भाव पर दृष्टि डाल रहा है। इस अवधि में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। सक्रियता बढ़ेगी, जीवन हंसी-खुशी से गुजरेगा। अत्यधिक वासना और विवाहेतर संबंधों से बचें।

अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करें।

1. चींटियों को शक्कर और आटा दें।
2. कन्याओं को खीर खिलाएं।
3. भोजन से पहली चपाती निकालकर गाय को दें।
4. लक्ष्मीजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - सूर्य
(13/09/2028 - 14/03/2029)

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष होगी। आपके लिए यह 15/03/2019 को प्रारंभ होगी और 14/03/2029 को समाप्त होगी।

महादशा :- मंगल
(14/03/2029 - 14/03/2036)

मंगल की महादशा 14/03/2029 को आरम्भ होगी और 7 वर्ष की होकर 14/03/2036 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल बारहवें भाव में स्थित है। मंगल की दृष्टि छठे, सातवें तथा तीसरे भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 10 वर्ष की चन्द्रदशा चल रही थी। आपकी छोटी यात्राएँ हुई होंगी और आपको बौद्धिक कार्यों में सफलता तथा भाई-बहनों से सुख मिला होगा। इस दशा के दौरान व्यय, यात्रा तथा आध्यात्मिक कार्यों में वृद्धि हो सकती है।

स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपको कोई बड़ी बीमारी नहीं होगी। किन्तु आपको मामूली चोटों और आँख की समस्याओं के प्रति सावधानी बरतनी होगी। आपके पैरों तथा टखनों में पीड़ा हो सकती है। कुछ मामूली बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य सामान्यतया उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

धन संचय में आपको कुछ समस्या हो सकती है किन्तु, आपकी आय आपके व्यय से कम नहीं होगी और आपके उपर ऋण नही होगा। छठे भाव पर मंगल की दृष्टि के फलस्वरूप आपको विपक्षियों-विरोधियों पर विजय मिल सकती है और उनसे लाभ हो सकता है। जीविका के लिये सैन्य सेवा, इन्जीनियरिंग, सर्जरी के कार्य या लोहा-इस्पात से संबद्ध व्यवसाय का चयन कर सकते हैं। लोहा और इस्पात, सर्जरी, अस्पताल प्रशासन या परोपकारी संस्था से संबद्ध व्यवसाय लाभदायक होगा। नौकरीपेशा लोगों के कार्यों में परिवर्तन और साझेदारों से लाभ हो सकता है और आप करार तथा अनुबन्ध कर सकते हैं। आपका स्थानान्तरण हो सकता है। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ सकता है। सफलता वाधित हो सकती है, व्यापार में उथल-पुथल हो सकती है किन्तु दशा की प्रगति के

साथ इसमें सुधार हो सकता है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

आपको वाहन सुख मिल सकता है। यात्रा की सम्भावना है और आप व्यापार के सिलसिले में विदेश भी जा सकते हैं। यात्राएं आखिर में लाभदायक सिद्ध होंगी। ऐसा मंगल की अन्तर्दशा में होगा। जमीन-जायदाद के मामलों के लिए यह दशा उत्तम होगी। इस दशा के दौरान सम्पत्ति का लेन-देन हो सकता है।

शिक्षा :

आपको अपनी श्रेणी बरकरार रखने के लिये कठिन परिश्रम करना होगा। किन्तु आप दृढ़संकल्प के साथ अच्छा करेंगे। आपके पाठ्यक्रम में कुछ परिवर्तन हो सकता है। यदि आप शोध-परियोजनाओं से सम्बद्ध हैं तो इस दशा में, और खासकर बुध और मंगल की अन्तर्दशा में, अच्छा करेंगे। आपके लिये गणित, तर्कशास्त्र, विधि तथा गूढ़ विषयों का अध्ययन लाभदायक हो सकता है। आपको विरोधियों व प्रतिस्पर्धियों पर विजय मिल सकती है। आपकी धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन में रुची होगी।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। बच्चों से अस्थायी रूप से दूर हो सकते हैं। उन्हें अध्ययन कार्यों के सिलसिले में घर छोड़ना पड़ सकता है। आपके जीवन साथी में बाधाओं का सामना करने की पर्याप्त क्षमता होगी। आपके जीवन साथी के साथ सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आपकी माता के लिए समय समृद्धिदायक रहेगा, उनकी यात्रा हो सकती है और आपके उनके साथ सम्बन्ध सुन्दर रहेंगे। आपके पिता की अचल सम्पत्ति और जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी। आपके छोटे भाई-बहनों के व्यवसाय में उन्नति होगी और बड़ों के लिए समय लाभदायक रहेगा। आपके उनके साथ सम्बन्ध बहुत अच्छे रहेंगे। आपके मित्रों की संख्या विशाल होगी और इस दशा के दौरान आप उनसे सम्पर्क बनाये रहेंगे।

अन्तर्दशा :

मंगल की दशा में मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपकी यात्रा और व्यय हो सकता है। राहु कुछ समस्याए उत्पन्न कर सकता है जबकि गुरु की अन्तर्दशा में लाभ किन्तु स्वास्थ्य कुछ खराब रहेगा। शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप व्यवसाय में प्रगति होगी जबकि बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपकी शिक्षा उत्तम होगी और निवेश तथा सट्टा सफल रहेगा। केतु के कारण कुछ मानसिक तनाव हो सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और धन तथा सुख की प्राप्ति होगी। आगे सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान आपको जीवन का आराम तथा माता से लाभ मिलेगा जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको छोटे भाई-बहनों से सुख मिलेगा तथा यात्राएं होंगी।

अंर्तदशा :- मंगल - मंगल
(14/03/2029 - 10/08/2029)

आपके लिए मंगल की महादशा 14/03/2029 को प्रारंभ हुई है। इस महादशा के अंतर्गत प्रथम अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 14/03/2029 को प्रारंभ होकर 10/08/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल वीरता, साहस, अचल संपत्ति और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आपको आर्थिक नुकसान से बचने के लिए सावधान रहना चाहिए। आपकी बहुत सी यात्राएं हो सकती हैं जिनमें कुछ व्यर्थ हो सकती हैं। सामुदायिक स्वास्थ्य विभाग में काम करने करने वाले लाभान्वित होंगे। लाभदायक अनुबंध या समझौता संभव है। जीवनसाथी से कुछ मनमुटाव हो सकता है। भाइयों के साथ संबंध मधुर रहेंगे। अध्यात्म में रुचि होगी।

जीवनसाथी को मामूली व्याधि हो सकती है पर वे प्रतिस्पर्धियों और विरोधियों पर विजय प्राप्त करेंगे। आपके पिता अचल संपत्ति खरीद सकते हैं या वर्तमान जायदाद में मरम्मत आदि करवा सकते हैं। माता सौभाग्यशाली रहेंगी; उनकी कुछ यात्राएं हो सकती हैं। आपके छोटे भाई-बहन कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे।

आपकी संतान की शिक्षा या कार्यक्षेत्र में परिवर्तन हो सकता है। अगर आप सेवारत हैं तो अनुबंध हो सकते हैं। व्यापारीगण और परामर्शदातओं को लक्ष्य प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना होगा।

नेत्र, पैर के रोग, पित्तविकार से सावधान रहें। अरिष्ट से बचाव के लिए शिवजी की आराधना करें।

अंर्तदशा :- मंगल - राहु
(10/08/2029 - 29/08/2030)

आपके लिए मंगल की महादशा 14/03/2029 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी। आपके लिए यह 10/08/2029 को प्रारंभ होकर 29/08/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक लाभ, परिवर्तन और लंबी यात्राओं का कारक है।

इस अवधि में आपकी संकल्पशक्ति उत्तम रहेगी। भौतिक सुख उपलब्ध रहेंगे। उच्चपद पर आसीन होंगे। अध्यात्म में रुचि होगी। कोइ लंबी यात्रा या विदेश यात्रा हो सकती है। आप स्वतंत्रचित्त और अपरंपरावादी हैं। सामाजिक रीतियों का पालन करना श्रेयस्कर होगा। संचार साधनों में सफलता मिल सकती है। छोटे भाई-बहनों से संबंध मधुर रहेंगे। आप अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए साहस का परिचय देंगे।

आपके जीवनसाथी की सक्रियता बढ़ेगी। उनकी आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। आपके पिता के धन में वृद्धि होगी। आपकी माता शत्रुओं पर विजयी होंगी। आपके भाई-बहन अनुबंधों पर

हस्ताक्षर कर सकते हैं, उनका विवाह हो सकता है। उनकी आय बढ़ेगी, आकांक्षाएं पूर्ण होंगी, उत्तम मित्र बनेंगे।

आपकी संतान तकनीकी विषयों का अध्ययन कर सकती है। अगर से कार्यारत हैं तो निवेश से धनार्जन कर सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे; धन का संचय होगा। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ेंगे। व्यापारियों को लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कठोर परिश्रम करना होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। हाथ-पैरों में मामूली शिकायत हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए राहु मंत्र का जाप करें।

ॐ रां राहवे नमः